राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संगठन की मासिक पत्रिका

स्काउट गाइड

ज्योति

वर्ष–24 | अंक–01 | जुलाई, 2023 | कुल पृष्ठ–32 | मूल्य–₹ 15

स्थानीय संघ चौमूं के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथिगण एवं समारोह को संबोधित करते हुए स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य

स्काउट गाइड स्थानीय संघ का वार्षिक अधिवेशन, कार्यालय का उद्घाटन

चौमूं शहर में रावला चौक उप जिला अस्पताल के पास 14 जुलाई को स्थानीय संघ चौमूं के नवनिर्मित कार्यालय भवन शहीद मेजर आदित्य सिंह राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड का उद्घाटन एवं वार्षिक अधिवेशन स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य के मुख्य आतिथ्य एवं स्टार फाउंडेशन की संस्थापक अध्यक्षा रूक्ष्मणी कुमारी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। खास बात ये है कि इस कार्यालय का नाम शहीद मेजर आदित्य सिंह के नाम पर रखा गया है। उद्घाटन समारोह में शहीद परिवारजनों ने भी शिरकत की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्टेट चीफ कमिश्नर स्काउट एवं पूर्व मुख्य सचिव निरंजन आर्य ने अपने उद्बोधन में स्काउट गाइड के सेवा कार्य तथा कार्य प्रणाली पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जीवन में निष्ठा एव समर्पण भाव से व्यक्ति उन्नति एवं प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। उन्होंने रूक्ष्मणी कुमारी द्वारा भवन निर्माण में दिए गए आर्थिक सहयोग की सराहना की।

कार्यक्रम की अध्यक्ष एआईसीसी सदस्य एवं स्टार फाउंडेशन की संस्थापक अध्यक्षा रूक्ष्मणी कुमारी ने कहा कि उनके परिवार की ओर से विधानसभा क्षेत्र में समाज हित में विभिन्न निर्माण कार्य करवाए हैं। इसी कड़ी में यह स्काउट स्थानीय संघ का नवनिर्मित कार्यालय भवन समाज को समर्पित किया है एवं आगे भविष्य में भी क्षेत्र की जनता के हित में सदैव तत्पर रहने का भरोसा दिलाया।

राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन व स्थानीय संघ प्रधान डॉ. श्रवण बराला ने भी समारोह को संबोधित किया। इस दौरान स्थानीय संघ के प्रधान डॉ. श्रवण बराला ने स्थानीय संघ नवनिर्मित कार्यालय के ऊपर एक नया हॉल बनाने की घोषणा की।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अतिथियों ने ध्वज फहराकर एवं दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन, राज्य संगठन आयुक्त (स्काउट) पूरण सिंह शेखावत, सहा. राज्य संगठन आयुक्त (गाइड) श्रीमती नीता शर्मा, सर्कल ऑर्गेनाइजर शरद कुमार शर्मा, स्थानीय संघ उप प्रधान भगवानसहाय परीक, सहायक जिला कमिश्नर प्रभारी पंकज सैनी, सहायक कमिश्नर पंकज मीणा, सहायक कमिश्नर नवीन शर्मा, सचिव हरिशंकर शर्मा, सहायक सचिव प्रताप सोनी, बालकृष्ण भारद्वाज, कोषाध्यक्ष संतोष मिश्रा, पृथ्वी सिंह नाथावत, राधेश्याम यादव, पार्षद कन्हैयालाल थावरिया सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

स्काउट गाइड ज्योति
वर्ष : 24 अंक : 01
जुलाई, 2023

सलाहकार मण्डल

निरंजन आर्य
आई.ए.एस. (से.नि.)
स्टेट चीफ कमिश्नर

कानाराम, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (स्काउट)

निर्मल पंवार
स्टेट कमिश्नर (रोवर)

डॉ. भंवर लाल, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (कब)

महेन्द्र कुमार पारख, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (एडल्ट रिसोर्स)

रूक्मणि आर.सिहाग, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (गाइड)

शुचि त्यागी, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (रेंजर)

टीना डाबी, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (बुलबुल)

मुग्धा सिन्हा, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (एडल्ट रिसोर्स)

स्टेट कमिश्नर (हैडक्वार्टर्स–स्काउट)
नवीन महाजन, आई.ए.एस.
नवीन जैन, आई.ए.एस.
डॉ. एस.आर. जैन
एस.के.सोलंकी, आई.ए.एस.(से.नि.)
डॉ. अखिल शुक्ला

स्टेट कमिश्नर (अहिंसा, शांति–समन्वय)
मनीष कुमार शर्मा

राज्य कोषाध्यक्ष
ललित कुमार मोरोडिया

सम्पादक

डॉ. पी.सी.जैन
राज्य सचिव

सहायक सम्पादक

नीरज जैन

इस अंक में

	विषय	पृष्ठ संख्या
•	दिशाबोध	4
•	संपादकीय	4
•	स्काउट चीफ श्री निरंजन आर्य को आभार	5
•	राष्ट्रपति स्काउट प्रशिक्षण शिविर	6
•	शिक्षा सचिव की अध्यक्षता में बैठक	7
•	ग्रीष्मावकाश गतिविधि सम्पन्न	8
•	राष्ट्रपति गाइड प्रशिक्षण शिविर	9
•	Asia Pacific Region Inter-generational Leadership Roundtable	10
•	रोवर–रेंजर साहसिक एवं स्काउटर–गाइडर शैक्षिक भ्रमण शिविर	11
•	उदयनिवास शिविर केन्द्र का ऐतिहासिक परिचय	16
•	कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर	18
•	हमारा स्वास्थ्य : सूर्य से करें प्यार	23
•	हमारे महापुरुष : बलिदानी अमृता देवी	24
•	विश्व जनसंख्या दिवस	25
•	नेशनल ग्रीन कोर : वन महोत्सव	26
•	पर्यटन स्थल : जयसमन्द झील	28
•	दक्षता पदक	29
•	गतिविधि पञ्चांग	30

लेखकों से निवेदन

स्काउट गाइड ज्योति का प्रकाशन मात्र प्रकाशन भर नहीं है बल्कि यह पत्रिका हमारे संगठन का दर्पण है, जो आयोजित हो चुकी गतिविधियों को प्रस्तुत करने, संगठन के कार्यों और इसके प्रशिक्षण तथा अन्य समाजोपयोगी क्रियाकलापों के विचारों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम है।

समस्त पाठकों, सृजनात्मक एवं रचनाधर्मी प्रतिभाओं से स्वलिखित, मौलिक व पूर्व में अप्रकाशित स्काउटिंग गाइडिंग से संबंधित लेख, यात्रा वृत्तान्त, कैम्प क्राफ्ट संबंधी लेख, प्रशिक्षण विधि, पाठक प्रतिक्रिया आदि प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। आपके अनुभव प्रत्येक स्काउट गाइड के लिए अमूल्य हैं। आप द्वारा प्रेषित सामग्री आपके नाम व फोटो के साथ प्रकाशित की जावेगी। लेख स्पष्ट टंकित हो तथा उस पर यह अवश्य लिखा हो कि 'यह लेख मौलिक एवं अप्रकाशित है'।

प्रकाशनार्थ सामग्री हमारी ईमेल आई.डी. **scoutguidejyoti@gmail.com** पर भिजवाई जा सकती हैं।

स्काउट गाइड ज्योति वार्षिक सदस्यता शुल्क	आजीवन सदस्यता शुल्क
व्यक्तिगत शुल्क :100/– संस्थागत शुल्क :150/–	1200/–

शुल्क राशि राज्य मुख्यालय जयपुर पर एम.ओ. अथवा 'राजस्थान स्टेट भारत स्काउट एण्ड गाइड, जयपुर' के नाम डिमान्ड ड्राफ्ट द्वारा जमा कराई जा सकती है।

नोट : स्काउट गाइड ज्योति में छपे/व्यक्त विचार प्रस्तोता के अपने हैं। यह जरूरी नहीं है कि संगठन इनसे सहमत ही हो।

दिशाबोध

स्काउटिंग है सामयिक आवश्यकता

प्रदेश स्काउट गाइड संगठन की बात करें तो यह तो सभी को अनुभूत ही है कि राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड की अपनी अलग ही पहचान व कार्य शैली है। एक ऐसी सार्थक कार्यशैली जो अब परम्पराओं का रूप ले चुकी है। जब कभी हमने राष्ट्रीय स्तर पर अन्य प्रदेश संगठनों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तब तब ही हमने अन्य प्रदेशों से आये स्काउट गाइड व वयस्क लीडर्स को अपनी ओर आकर्षित ही नहीं किया वरन् उन्हें अपनी अनूठी व बेजोड़ विधाओं के साथ नवीन आयामों व नवाचारों से अवगत भी करवाया।

मैं अपने सभी वयस्क लीडर्स, ऑर्गेनाइजिंग इकाइयों एवं निष्ठावान स्वैच्छिक कर्मियों से अपील करता हूँ कि राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड की संख्यात्मक वृद्धि के लिए अपना सहयोग प्रदान करते हुए स्काउटिंग गाइडिंग को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक सामयिक आवश्यकता के रूप में प्रचारित–प्रसारित करने के अनुष्ठान में अपनी आहूति दें। नव सत्रारंभ के साथ हमारा लक्ष्य है निजी विद्यालयों में स्काउटिंग गाइडिंग का पंजीकरण, जिसमें सभी का सहयोग अपेक्षित है।

अन्त में, सभी स्काउट–गाइड व स्काउटर–गाइडर को नव शिक्षा सत्र की पुनः शुभकामनाएं देते हुए आह्वान करता हूँ कि पर्यावरण की दृष्टि से यह माह बहुत महत्वपूर्ण है। पिछले दो माह के दौरान पर्यावरण को सुधारने, संरक्षण और उसके प्रति जन चेतना जागृत करने के उद्देश्य से अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दिवस मनाये गये। हम सभी पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के प्रति और अधिक संवेदनशील बनें और पूरे समाज को भी प्रेरित करें, मानसून के वर्षा जल को भी संरक्षित करने का प्रयास करें।

आप सभी का नया सत्र नये लक्ष्यों एवं उम्मीदों के साथ आपकी मंज़िल प्राप्ति में सहायक हो।

निरंजन आर्य
स्टेट चीफ कमिश्नर

संपादकीय

स्काउट गाइड को स्वावलंबन, स्वरोजगार और सेवा के पथ पर अग्रसर करने के उद्देश्य से हमारा संगठन बड़ा ही हृदय ग्राही और यथार्थ प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सदैव वचनबद्ध रहा है। ग्रीष्मावकाश के कार्यक्रम तो इसके सबसे बड़े आयाम है। त्रिसूत्री कार्यक्रमों की योजना के तहत इन अवकाश के दिनों में विविध गतिविधियों, कार्यक्रमों एवं शिविरों का सफल आयोजन हुआ।

स्वरोजगार – इस दिशा में पूरे प्रदेश में मण्डल, जिला, ग्रुप व ग्रामीण स्तर पर लगभग 90 कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्रों का सफल संचालन कर 14 हजार से अधिक छात्र–छात्राओं को विविध प्रकार के रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण उपलब्ध कराये गये। यह बताते हुए और अधिक हर्ष है कि इन केन्द्रों पर बालिकाओं के लिए 'सेल्फ डिफेन्स' का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। बालिकाओं को जूडो–कराटे एवं अन्य ऐसी विधियों का प्रशिक्षण दिया गया, जिससे वे अपनी रक्षार्थ निश्चिंतता का भाव महसूस कर सकें।

स्वावलंबन – अवकाश के दिनों में राजस्थान के एकमात्र सुरम्य पर्वतीय क्षेत्र आबूपर्वत पर विविध प्रकार के प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया, जिनमें स्काउट गाइड व वयस्क लीडर्स ने बढ़–चढ़कर सहभागिता की। इस वर्ष पश्चिम बंगाल के पर्वतीय पर्यटन स्थल 'दार्जिलिंग' में आयोजित रोवर–रेंजर साहसिक एवं स्काउटर–गाइडर शैक्षिक भ्रमण में अच्छी सहभागिता रही।

सेवा – तीसरा सबसे वृहद कार्यक्रम जो स्काउटिंग के पाँचवे नियम की अनुपालना में स्वप्रेरणा से संचालित ग्रीष्मावकाश का सबसे बड़ा आयोजन है–सेवा कार्य। स्काउट गाइड, रोवर रेंजर, स्काउटर गाइडर कोई भी इससे अछूता नहीं रहा। सभी ने अपने–अपने क्षेत्र में जल सेवा कर भीषण गर्मी में पथिकों, राहगीरों को शीतलता प्रदान की तो कहीं मूक पशु–पक्षियों के पानी के परिण्डे, दाना डालने के लिए चुग्गापात्र बाँधे तो पशुओं के पानी पीने की खेली की संभाल कर वर्ष पर्यन्त इनके सार–संभाल का संकल्प लिया।

स्वरोजगार, स्वावलंबन और सेवा को समर्पित हमारे कार्यक्रमों व गतिविधियों की चहुँओर प्रशंसा ही हमारी सफलता है। इसके लिए संगठन के समर्पित कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं।

डॉ. पी.सी. जैन, राज्य सचिव

स्काउट चीफ श्री निरंजन आर्य को आभार

18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी के शानदार आयोजन पर श्री आर्य को धन्यवाद ज्ञापित

भारत स्काउट एवं गाइड के मुख्य राष्ट्रीय आयुक्त एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष डॉ. के.के. खंडेलवाल की तरफ से पाली राजस्थान में 18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी के बेहतरीन व शानदार आयोजन के लिए प्रदेश के स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य का हार्दिक आभार व्यक्तकरते हुए सराहना पत्र प्राप्त हुआ है। डॉ. खंडेलवाल ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की 1 जुलाई, 2023 को हुई बैठक में जनवरी में रोहट, पाली मारवाड़, राजस्थान में 18वीं राष्ट्रीय जंबूरी के उत्कृष्ट आयोजन एवम् संगठन के इतिहास में एक मील का पत्थर बनाने के लिए श्री आर्य के लिए धन्यवाद ज्ञापन का प्रस्ताव पारित किया।

डॉ. खंडेलवाल ने अपने सराहना व आभार पत्र में जंबूरी के दौरान उत्कृष्ट भौतिक सुविधाओं, वाटर एक्टिविटी, गर्म पानी की व्यवस्था, पैराग्लाइडिंग, हॉट एयर बैलून एवं सूर्य किरण आयोजन के साथ ही आकर्षक गतिविधियों को शामिल करने तथा अखिल भारतीय स्तर पर मीडिया कवरेज से जंबूरी को ऐतिहासिक बनाने के लिए प्रदेश के स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य की प्रतिबद्धता, कड़ी मेहनत और अनवरत काम की अत्यधिक सराहना की है।

गौरतलब है की रोहट पाली में जनवरी में 18वीं राष्ट्रीय राष्ट्रीय स्काउट गाइड जंबूरी आयोजन के लिए प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने बजट आवंटन कर इसके उत्कृष्ट आयोजन की जिम्मेदारी श्री निरंजन आर्य को सौंपी और परिणामस्वरूप 18वीं राष्ट्रीय जंबूरी का प्रदेश में यादगार एवं ऐतिहासिक आयोजन हुआ।

Niranjan Arya thanked by Na...
Headquarters for Jamboree i...

First India Bureau
Jaipur

A letter of appreciation has been received from Chief National Commissioner of Bharat Scouts and Guides and President of the National Executive Committee, Dr K.K. Khandelwal expressing heartfelt gratitude to State Chief Commissioner Niranjan Arya for organizing the 18th Nation-... tional Executive Committee meeting held on 1st July, 2023, proposed a memorandum of thanks ...

Niranjan Arya

राष्ट्रीय मुख्यालय ने ...
चीफ निरंजन आर्य ...

नवज्योति, जयपुर। भारत स्क... मुख्य राष्ट्रीय आयुक्त एवं राष्ट्रीय का...

राष्ट्रीय मुख्यालय द्वारा निरंजन आर्य के प्रयासों की सराहना

स्काउट चीफ निरंजन आर्य को आभार, जंबूरी के शानदार आयोजन पर आर्य को धन्यवाद ज्ञापित

जयपुर (कासं)। भारत स्काउट एवं गाइड के मुख्य राष्ट्रीय आयुक्त एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष डॉ. के.के. खंडेलवाल की तरफ से पाली राजस्थान में 18वीं राष्ट्रीय जंबूरी के बेहतरीन व ...

...ट्रीय मुख्यालय द्वारा निरंजन
...आर्य के प्रयासों की सराहना

जयपुर (हुक्मनामा समाचार)। भारत स्काउट एवं गाइड के मुख्य राष्ट्रीय ...

DR. K.K. KHANDELWAL, I.A.S. (R)
Chief National Commissioner
डॉ. के.के. खण्डेलवाल, भा.प्र.से. (से.नि.)
मुख्य राष्ट्रीय आयुक्त

BHARAT SCOUTS AND GUIDES
National Headquarters
भारत स्काउट्स एवं गाइड्स
राष्ट्रीय मुख्यालय

No. BSG.NHQ. D-1-6/1378/2023 Dt. 07-07-202

Subject: Letter of Appreciation-regarding

My dear Niranjan Arya Ji,

The National Executive Committee in its meeting held on 1st July, 2023 recorded its deep sense of appreciation and lauded for your excellent efforts and dedication in organizing the 18th National Jamboree of the Bharat Scouts and Guides at Rohat, Pali Marwar, Rajasthan from 4th to 10th January, 2023. The 18th National Jamboree was not only a grand success but a memorable one by creating a milestone in the history of the organization.

I, on behalf of all the members of the National Executive Committee of the Bharat Scouts and Guides would like to convey our heartfelt gratitude to you and your team of volunteer & professional leaders for making an impeccable arrangement and found everything to the best satisfaction of all the participating contingents and its leader.

We highly appreciate your commitment, hard and tiresome work in making the Jamboree a historical one with inclusion of new and attractive activities for the first time like 'Suryakiran'- an aerobatic display, the display of 7500 Sq. Ft. National Flag at the opening ceremony, introduction of zip line & sky cycling adventurous activities, water activity within the Jamboree site, supply of hot water, participation of Sea Scout/Guide unit and Children with Special Needs (CWSN), coverage of electronics & print media highlighting the Jamboree activity at PAN INDIA level boosted the morale of the gala event.

I, personally also congratulate you for demonstrating the highest level of standard maintained in organizing the Jamboree. Your attention towards management of entire logistic is highly commendable.

Please convey my thanks and gratitude to all the members of your team.

With profound regards,

Yours in Scouting,

DR. K.K.KHANDELWAL, IAS (R)
CHIEF NATIONAL COMMISSIONER
&
CHAIRPERSON, NATIONAL EXECUTIVE COMMITTEE

To,
Shri Niranjan Arya, IAS(R)
State Chief Commissioner
The Bharat Scouts and Guides
RAJASTHAN STATE.

Copy to: Hon'ble Chief Minister, Govt. of Rajasthan for kind perusal.

CC: The Director, BSG for the NHQ record.

18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी में नवीन आयाम स्थापित करते हुए उत्कृष्ट आयोजन करने के लिए चीफ नेशनल कमिश्नर डॉ. के.के. खण्डेलवाल द्वारा स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य को प्रेषित सराहना पत्र एवं समाचार पत्रों में प्रकाशित खबरें

राष्ट्रपति स्काउट प्रशिक्षण शिविर

राज्यपाल महोदय से शिष्टाचार भेंट

महामहिम राज्यपाल श्रीयुत कलराज मिश्र से उनके आबू पर्वत प्रवास के दौरान स्काउट प्रतिनिधियों ने शिष्टाचार भेंट कर आबू पर्वत में 2 जून से 6 जून तक चल रहे राष्ट्रपति अवार्ड प्रशिक्षण शिविर एवं विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों की जानकारी एवं कार्यक्रमों के बारे में बताते हुए स्काउट गाइड परंपरा से स्कार्फ पहनाकर स्वागत किया एवं सिरोही की तलवार भेंट कर अभिवादन किया गया।

शिष्टाचार भेंट के दौरान सहायक राज्य संगठन आयुक्त विनोद दत्त जोशी ने माननीय राज्यपाल महोदय को राजस्थान में संचालित की जा रही गतिविधियों की प्रगति से अवगत कराया। एसडीएम माउंट आबू सिद्धार्थ पालानीचामी एवं परिसहाय माननीय राज्यपाल महोदय श्री सुमित मेहरड़ा ने राष्ट्रपति अवार्ड प्रशिक्षण शिविर का अवलोकन किया।

2 जून से 6 जून तक राज्य प्रशिक्षण केंद्र आबू पर्वत राष्ट्रपति अवार्ड प्रशिक्षण शिविर का आयोजित किया जा रहा है जिसमें राजस्थान प्रदेश के विभिन्न जिलों से 286 स्काउट्स ने भाग लिया। प्रशिक्षण में स्काउट्स को राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें प्राथमिक सहायता, शिविर कला, मार्चपास्ट, सिग्नलिंग, पायनियरिंग, मेपिंग, स्टार गेजिंग, टेंट पिचिंग, हाइक, आपदा प्रबंधन, WOSM, शेल्टर, ट्रेसल, लीडरशिप डवलपमेंट, खेल व्यायाम, अनुशासन सहित विभिन्न दक्षता बेजों का प्रशिक्षण दिया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस

5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर राजभवन से रन फॉर एनवायरमेंट रैली का आयोजन किया गया, जिसे उपखंड अधिकारी आबू पर्वत सिद्धार्थ पालानिचामी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली राजभवन से नक्की झील के चक्कर लगाते हुए पोलो ग्राउंड पर समाप्त हुई। अंत में नक्की झील एवं गांधी वाटिका और आसपास के क्षेत्र में लगभग 300 स्काउट्स ने अप्राकृतिक कचरा पॉलीथिन वेपर्स इत्यादि को इकट्ठा कर उनका निस्तारण किया।

पर्यावरण दिवस पर महामहिम राज्यपाल श्री कलराज मिश्र हरी झण्डी दिखाकर जन चैतना रैली को रवाना करते हुए

शिक्षा सचिव की अध्यक्षता में बैठक

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के बजाज नगर स्थित राज्य मुख्यालय के सभाकक्ष में 15 जून, 2023 को स्काउट गाइड संबंधि मुद्दों के निराकरण हेतु स्टेट कमिश्नर एवं शिक्षा सचिव श्री नवीन जैन, आई.ए.एस. की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई, जिसमें समसा कमिश्नर श्री मोहनलाल यादव, संयुक्त शासन सचिव श्री प्रवीण लेखरा, उप शासन सचिव श्री सतीश कुमार गर्ग, विशेषाधिकारी डॉ. रणवीर सिंह, उप निदेशक श्री अमर सिंह चांदोलिया, संयुक्त निदेशक श्री सुभाष चन्द्र यादव, मुख्य लेखाधिकारी श्रीमती भावना संतानी एवं संगठन के राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन सहित शिक्षा विभाग एवं संगठन के लगभग 30 अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बैठक में सर्वप्रथम राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन ने शिक्षा सचिव महोदय का स्कार्फ पहनाकर पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया तथा बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ की। बैठक में मुख्यमंत्री जी की बजट घोषणा की पालनार्थ विद्यालयों में स्काउटिंग गाइडिंग प्रारम्भ कराने, लक्ष्मणगढ़-सीकर में स्काउट आवासीय विद्यालय प्रारम्भ करने हेतु मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराने, नवीन जिलों के लिए नये पद स्वीकृत करने, रिक्त पदों को भरने, विद्यालयों से बकाया कोटामनी शुल्क का भुगतान कराने के साथ ही कार्मिकों को पुरानी पेंशन सुविधा तथा चली आ रही वेतन विसंगति दूर करने जैसे बिन्दुओं को शिक्षा सचिव श्री जैन के संज्ञान में लाया गया। जिन पर शिक्षा विभाग एवं संगठन के अधिकारियों ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा विचार विमर्श किया गया।

बैठक के पश्चात श्री नवीन जैन ने स्काउट संगठन के अधिकारियों को सभी बिन्दुओं की विस्तुत रिपोर्ट एवं प्रस्ताव तैयार कर विभाग को प्रस्तुत करने एवं शिक्षा विभाग के अधिकारियों को स्काउट संगठन की पत्रावलियों के शीघ्र निस्तारण एवं वित्त से जुड़े मामलों में वित्त विभाग को पत्रावलियां शीघ्र प्रस्तुत करने हेतु निर्देश प्रदान किये।

अन्त में सभी उपस्थित अधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक की कार्यवाही समाप्त हुई।

ग्रीष्मावकाश गतिविधि सम्पन्न

राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड संगठन ने राज्य स्तर पर बालचरों के विकास के उद्देश्य से ग्रीष्मावकाश में विभिन्न साहसिक शिविर, शैक्षिक भ्रमण, रोजगारोन्मुखी अभिरूचि शिविर एवं लघु उद्योग शिविर आयोजित करने का जिम्मा अपने हाथों में लिया हुआ है। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी इस श्रृंखला को आगे बढाते हुए स्काउट गाइड संगठन द्वारा विभिन्न कार्यक्रम संचालित किये गये, जिनमें मई–जून में आबू पर्वत स्थित दोनों स्काउट गाइड शिविर केद्रों पर ग्रीष्मकालीन शिविरों की श्रृंखला में प्रत्येक शाखा के शिविर आयोजित किये गये।

कब/स्काउट/रोवर विभाग :

प्रदेश के स्काउट्स, रोवर्स व लीडर्स की योग्यता वृद्धि के लिए ग्रामीण/स्वतंत्र रोवर लीडर बेसिक कोर्स 18 से 24 मई तक हुआ, जिसमें 26 संभागियों ने सहभागिता की। कब मास्टर व स्काउट मास्टर एडवांस कोर्स 18 से 24 मई तक आयोजित हुए, जिनमें क्रमशः 15 व 71 ने सहभागिता की।

स्काउट्स के लिए राष्ट्रपति स्काउट पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर 2 से 6 जून तक हुआ जिसमें 286 स्काउट्स ने सहभागिता कर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

बुलबुल/गाइड/रेंजर विभाग :

जब पूरे देश में महिला एवं बालिका सम्बल की पुरजोर कोशिश की जा रही है तो यह संगठन कैसे पीछे रह सकता है। प्रदेश की बुलबुल, गाइड व रेंजर विभाग के तहत राज्य मुख्यालय जयपुर के निर्देशानुसार दिनांक 26 मई से 1 जून 2023 तक राज्य स्तरीय गाइड कैप्टन फ्लॉक लीडर और रेंजर लीडर एडवांस कोर्स का आयोजन माउंट आबू में किया गया। गाइड कैप्टन में 63, फ्लॉक लीडर में 20 और रेंजर लीडर में 22 संभागियों ने पूरे राजस्थान प्रांत से प्रशिक्षण शिविर में सहभागिता की। शिविर के दौरान प्राथमिक चिकित्सा, मैपिंग, पायनियरिंग, लीडरशिप, अनुमान लगाना, तंबू लगाना, उखाड़ना, रोल कॉल, ड्रिल, मार्च पास्ट, निरीक्षण आदि के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण प्रदान किया गया। राज्य संगठन आयुक्त गाइड सुश्री सुयश लोढ़ा द्वारा शिविर का अवलोकन किया गया। शिविरार्थियों ने आबू का भ्रमण कर श्रमदान भी किया।

गाइड कैप्टन शिविर का संचालन सी.ओ. गाइड अलवर श्रीमती कल्पना शर्मा और लीडर ट्रेनर गाइड उमा कुमावत, फ्लॉक लीडर शिविर का संचालन पूर्व राज्य संगठन आयुक्त गाइड सुश्री बृजरानी माथुर एवं रेंजर लीडर बेसिक कोर्स का संचालन सी ओ गाइड बीकानेर श्रीमती ज्योतिरानी महात्मा के द्वारा किया गया।

गाइड्स के लिए राष्ट्रपति गाइड पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर 26 से 30 मई, 2023 तक आयोजित हुआ, जिसमें 163 गाइड्स ने सहभागिता कर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

14 से 18 जून, 2023 तक आयोजित सचिव/संयुक्त सचिव शिविर में 43 स्काउटर्स एवं 17 गाइडर्स ने सहभागिता की।

स्वावलम्बन शिक्षा :

अभिरूचि शिविरों व लघु उद्योग प्रशिक्षण शिविरों का सन् 1975 से संचालित 49वां सत्र माह मई से जून तक प्रदेश के सभी मण्डल व जिला मुख्यालयों के अलावा कतिपय कस्बों में भी सौ से अधिक स्थानों पर संचालन किया गया, जिनमें लगभग 14 हजार से अधिक किशोर व युवा लड़के लड़कियों ने भागीदारी की। ये शिविर प्रातः 7 से 11 बजे तक सम्पन्न हुए। इसी दौरान सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर विश्व तम्बाकू निषेध दिवस व पर्यावरण दिवस का भी आयोजन किया गया। प्रत्येक ग्राम, कस्बे व जिले में हजारों लोंगों को तम्बाकू सेवन न करने एवं पर्यावरण के संरक्षण की शपथ दिलाई गई। इन शिविर केन्द्रों पर विभिन्न हस्तकलाओं यथा– बिजली के घरेलू उपकरणों की मरम्मत, बिजली फिटिंग, मोबाइल फोन रिपेयरिंग, स्केटिंग, सिलाई, कढाई, नृत्य, वाद्यवादन, संगीत, मेहंदी मांडना, अल्पना चित्रकारी, टॉप ऑप्ट, सॉफ्ट टॉयज़ व पॉट मेकिंग के अलावा फूड प्रिजर्वेशन व केनिंग, ब्यूटिशियन आदि हस्तकलाओं का निःशुल्क प्रशिक्षण कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रदान किया गया। **साथ ही बालिकाओं को विशेष रूप से स्वरक्षार्थ जूड़ो–कराटे का विशेष रूप से प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया।**

सेवा सरिता :

स्काउट्स व गाइड्स द्वारा राहगीरों व यात्रियों को प्रचण्ड गर्मी से राहत दिलाने के उद्देश्य से रेल्वे स्टेशनों, बस अड्डों व भीड़–भाड़ वाले प्रदेश के

लगभग 6 सौ स्थानों पर शीतल जल सेवा के कार्यक्रम भी जनसेवा भावना के अन्तर्गत संचालित किये गये। उल्लेखनीय है कि जयपुर रेल्वे स्टेशन पर पिछले 52 वर्षों से लगातार यह सेवा ग्रीष्मावकाश में होती आ रही है। राजस्थान राज्य के सभी जिलों में छोटे छोटे कस्बों तक में स्काउट्स व गाइड्स द्वारा भीषण गर्मी में शीतलता प्रदान करने के लिए जल सेवा का कार्य पूर्ण उत्साह से किया गया।

पर्यावरण संरक्षण :

स्काउट गाइड संस्था के पाँचवे नियम के अनुसार स्काउट्स गाइड्स पशु पक्षी व प्रकृति प्रेमी होते हैं और इसी भावना का परिचय देते हुए ग्रीष्म ऋतु में स्काउट्स व गाइड्स द्वारा अभियान चला कर पक्षियों के लिए पानी के परिण्डे, दाना डालने हेतु चुग्गापात्र व आवास हेतु घोंसले बना कर विभिन्न स्थानों पर टांगे गए व आस पास में रहने वाले लोगों को इनमें दाना पानी डालने का संकल्प दिलाया गया। कुछ ऐसे निर्जन स्थलों जहाँ पर इस प्रकार की व्यवस्था नहीं हो सकी वहाँ स्काउट्स गाइड्स द्वारा स्वयं इनमें दाना पानी डालने की जिम्मेदारी ली गई। स्काउट गाइड संगठन की प्रेरणा व पहल पर सन् 2003 से संचालित परिण्डा व चुग्गा पात्र अभियान परवान चढ़ने लगा है और इससे प्रेरित होकर अन्य सेवाभावी संस्थाएं व जागरूक नागरिक परिण्डा बंधन की लुप्त होती परम्परा को पुनर्जीवित करने में लगे हैं। मोटे अनुमान के अनुसार स्काउट गाइड व उनके वयस्क लीडर्स की पहल पर राज्य में लगभग 2 लाख चुग्गापात्र व परिण्डे लगने के आसार हैं।

5 जून पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रदेश भर में रैलियों, गोष्ठियों एवं विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिनमें सैंकड़ों स्काउट गाइड रोवर रेंजर ने सहभागिता की।

राष्ट्रपति गाइड प्रशिक्षण शिविर

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, राज्य मुख्यालय, जयपुर के तत्वावधान में 5 दिवसीय राष्ट्रपति अवार्ड गाइड प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 26 मई से 30 मई, 2023 तक राज्य प्रशिक्षण केन्द्र आबू पर्वत पर किया गया, जिसमे राजस्थान प्रदेश के विभिन्न जिलों से 163 गाइड्स ने भाग लिया।

प्रशिक्षणार्थी गाइड्स को राष्ट्रीय मुख्यालय, नई दिल्ली के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें प्राथमिक सहायता, शिविर कला, सिग्नलिंग, पायनियरिंग, मैपिंग, टेंट पिचिंग, हाइक, आपदा प्रबंधन, ट्रेसल, खेल व्यायाम, अनुशासन सहित विभिन्न दक्षता बैजों का प्रशिक्षण दिया गया।

शिविर में संचालक के रूप में सर्कल ऑर्गेनाइजर, राज्य मुख्यालय, जयपुर श्रीमती कृष्णा सैनी ने अपनी अहम भूमिका को निभाई। सहयोगार्थ स्टाफ में श्रीमती अंजना शर्मा एलटी (गाइड), श्रीमती कान्ता शर्मा एलटी (गाइड), सुश्री कृतिका पाराशर सी.ओ. (गाइड), डॉ. स्मृति त्यागी, श्री नरेन्द्र खोरवाल, सी.ओ. (स्काउट), श्री सुनिल कुमार सोनी सी.ओ. (स्काउट) आदि ने शिविर में सहयोग प्रदान किया।

शिविर के दौरान आबू पर्वत पर 29 मई 2023 को कार्यवाहक राज्य संगठन आयुक्त (गाइड), सुश्री सुयश लोढ़ा, सार्जेन्ट एयर फोर्स सलेक्शन सेन्टर जोधपुर श्री अभिषेक जायसवाल, कॉर्पोरल एयर फोर्स सलेक्शन सेन्टर, जोधपुर श्री हेमन्त कुमार, पूर्व संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा श्रीमती नूतनबाला कपिला आदि ने शिविर का अवलोकन किया।

Powered by Triple Camera

Asia Pacific Region Inter-generational Leadership Roundtable

This was my first international conference which I had attended in KUALA LUMPUR, MALAYSIA. It is a proud moment for my teachers, family as well as me. I was the only Ranger who went there as participate from INDIA, with me there was our International Commissioner Mrs ANAR PATEL, National Commissioner Mrs GEETIKA KAROLA as well as Joint Director Mrs DRASHNA PAWASKAR, who attended this APR Intergenerational leadership roundtable event. Each and everyone was so helpful. Girl Guides/ Girl Scouts from different countries were so good as well as everyone was so altruistic, loving, caring and patient. Everyone was desperate for new learnings.

■ Who was there ?

- President of Girl Guides Association of Malaysia - DATUK SERI DR WAN AZIZAH WAN ISMAIL.
- Chief Commissioner of Girl Guides Association Malaysia- DATO JAYADHEVI SUBRAMANIAM.
- Chairperson APR, WAGGGS- CHEMPAKA EMALIN PAHAMIN.
- Total 230 PARTICIPANTES from 15 countries aged 18 to 30 were attended the roundtable.

■ What was the event About ?

The event is co-hosted by the APR WAGGGS and supported by the TEMASEK FOUNDATION. It aims to spark conversations and formulate strategies on intergenerational leadership for a sustainable thriving region.

■ Where & When did the Event take place ?

The event took place from 11 june to 14 June 2023 at The Pearl, Kuala Lumpur, Malaysia.

And the schedule depends on the number of activities and speeches.

■ Why was the event scheduled?

The primary purpose of the leadership conference was to provide attendees with the knowledge, skills and inspiration they need to become more effective leaders in their organizations and communities.

It was an all day professional development and networking conference created to provide a platform outside of the workplace to educate, encourage and inspire women to take their leadership to the next level.

■ My learnings from the event ?

- In this APR Intergenerational Leadership Roundtable I learnt and discussed the challenges and women experience in the society, workplace etc.
- Use self-awareness to strengthen leadership skills.
- Learnt and practiced about 6 leadership mindsets in intergenerational groups.
- Analyse how my leadership style and values impact the work environment.

By- Harshita Kharra
Group- Priyadarshani Open Ranger Team
District - Jaipur

रोवर-रेंजर साहसिक एवं स्काउटर-गाइडर शैक्षिक भ्रमण शिविर

स्थान : कुर्सियांग, दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल)

महेश कुमार कालावत
सी.ओ. (स्काउट) झुंझुनू

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के तत्वावधान में आयोजित रोवर रेंजर साहसिक शिविर का आयोजन दिनांक 08 से 12 जून, 2023 तक तथा स्काउटर गाइडर शैक्षिक भ्रमण शिविर दिनांक 12 से 16 जून, 2023 तक पश्चिम बंगाल राज्य के दार्जिलिंग जिले के कुर्सियांग शहर में आयोजित किये गये। साहसिक शिविर में 67 रोवर्स व 46 रेंजर व उनके 20 लीडर्स सहित कुल 133 की सहभागिता रही। वहीं अध्ययन शिविर में 119 स्काउटर्स व 64 गाइडर्स, कुल 194 ने सहभागिता की। शिविर के संचालन की जिम्मेदारी राज्य संगठन आयुक्त पूरण सिंह शेखावत के साथ सर्कल ऑर्गेनाइजर्स एल.आर.शर्मा, महेश कालावत, डिम्पल दवे व कल्पना शर्मा ने बखूबी निभाई।

कुर्सियांग ''लैण्ड ऑफ व्हाईट ऑर्किड'' के रूप में लोकप्रिय है। उत्कृष्ट एवं मनमोहक दृश्यों के अलावा यह स्थान अपने बौद्ध गोम्पा, झरनों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। एक शान्त हिल स्टेशन, सुहावना मौसम, कई दिनों तक लगातार वर्षा, रोलिंग पहाड़ियों पर प्रचुर मात्रा में सफेद ऑर्किड, बर्फ से ढ़के पहाड़ों की मनोरम सेटिंग, चाय के बागानों के मन लुभावन दृश्य और हरे–भरे जंगल हर किसी के मन को आर्कषित कर रहे थे।

प्रथम दिवस 08.06.2023

प्रथम दिन प्रातः 04:00 बजे से ही रोवर रेंजर का आगमन शुरू हो गया, सबके चेहरे पर मधुर मुस्कान, दार्जिलिंग चाय के बागान यात्रा की खुशी झलक रही थी। 10 बजे तक लगभग सभी का आगमन हुआ। तत्पश्चात अल्पाहार व चाय तथा स्वागत, परिचय, प्रार्थना एवं सामान्य जानकारी प्रदान की गई। दोपहर भोजन एवं विश्रान्ति के बाद पुनः सभी को एकत्र कर शिविर संबंधी आवश्यक दिशा–निर्देश जारी करके स्थानीय जानकारी प्रदान कर ग्रुपों का गठन किया गया।

दोपहर बाद सभी संभागी स्थानीय दर्शनीय स्थलों का अवलोकन करने हेतु रवाना हुए। नेशनल ट्रेनिंग सेन्टर से सटा हुआ चाय बागान बहुत ही मनोहारी, मनमोहक, रमणीक लग रहा था। सभी रोवर रेंजर पंक्तिबद्ध रूप से चाय के बागान से आगे के पॉइन्ट की ओर बढ़ते जा रहे थे। इस चाय के बागान में बहुत सारे श्रमिक चाय की पत्तियां तोड़ रहे थे, यहां पर उपस्थित श्रमिकों एवं लोगों से चाय प्रसंस्करण के पीछे के इतिहास, विज्ञान और कला की जानकारी प्राप्त की। सभी आगे बढ़ते हुए कुर्सियांग रेल्वे स्टेशन पहुँचे। कुर्सियांग रेल्वे स्टेशन पर टॉय ट्रेन का नजारा देखकर मन बड़ा ही उल्लासित हुआ। यहां की साफ–सफाई एवं ट्रेन का आकर्षण बड़ा ही मनमोहक था।

तत्पश्चात सभी को स्थानीय मार्केट भ्रमण हेतु निर्देश प्रदान कर कहा गया कि सभी को लगभग 1 घण्टे बाद पुनः इसी स्थान पर एकत्रित होना है। देखते ही देखते रोवर रेंजर मार्केट की ओर कुच कर गये और यहां की विशिष्टताओं से परिपूर्ण पारम्परिक बंगाली व्यंजन जैसे– पुचका, ढोकला और आलु से बने हुए स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाने लगे, बहुत सारे यहां की प्रसिद्ध चाय का आनन्द लेते नजर आये एंव खरीददारी भी की।

सभी वापिस रेल्वे स्टेशन एकत्र हुए और एडवेंचर ट्रेक की ओर प्रस्थान करने लगे। शहर को पार करने के बाद एक कच्चे रास्ते से जंगल से होते हुए आगे बढ़े, यहां पर बड़े–बड़े बांस एवं चीड़ के वृक्ष देखकर सभी के मन आल्हादित हो गये और एडवेंचर ट्रेक का आनन्द लेते हुए हम सब बेस कैम्प ट्रेनिंग सेन्टर पर पहुँचे। कैम्प फायर का आगाज किया गया, जिसमें रोवर रेंजर्स ने एक से बढ़कर एक मनमोहक एवं भाव विभोर करने वाली राजस्थानी संस्कृति की अनुपम छटा बिखेरी।

द्वितीय दिवस (09.06.2023)

आज का दिन सबके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था क्योंकि सभी को आज

दार्जिलिंग शहर का भ्रमण करना था, दार्जिलिंग को लेकर सभी बहुत ही उत्साहित, नजर आ रहे थे। प्रातः बी.पी. सिक्स किया एवं ध्वजारोहण के बाद सभी ने अल्पाहार करके अपने–अपने भोजन पैकेट प्राप्त अपनी–अपनी गाड़ियों में बैठ गये और ठीक 07:30 बजे हमारी गाडियों का कारवां आगे बढ़ा और सबसे पहले हम लोग घुम मोनेस्ट्री (घूम मठ) पहुँचे। यह सबसे पुराने बौद्ध मठों में से एक है, यह लामा शेरब ग्यात्सों द्वारा 1850 में स्थापित किया गया, यहां 15 फीट ऊंची मैत्रेय बुद्ध की प्रतिमा है।

घुम मोनेस्ट्री का अवलोकन करने के बाद हम बतासियां लूप पहुँचे, यहां का अद्भभुत दृश्य हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था, यहां पर एक युद्ध स्मारक है जिसका निर्माण जिला सैनिक बोर्ड दार्जिलिंग द्वारा उन बहादुर गोरखा सैनिकों की स्मृति में किया गया था, जिन्होने आजादी के बाद से राष्ट्र की सम्प्रभुता के लिए अपने प्राणों की आहूति दे दी थी।

दार्जिलिंग हिमालयी रेल्वे का उल्लेखनीय इंजिनियरिंग चमत्कार लोगों को देखने के लिए आकर्षित करता है। यहां लगभग अदृश्य रूप से रेल्वे लाईन एक सर्कल से गुजरती है और एक हजार फीट की ऊँचाई से नीचे उतरती है। यहां के मनमोहक एवं मनलुभावन दृश्यों को सभी ने अपने केमरे में कैद किया।

अब पहुँचे जापानीज पीस पगोड़ा। यह शान्ति स्तूप विश्व शान्ति के लिए डिजाइन किया गया था। जिसका निर्माण 1 नवम्बर 1992 में पूर्ण हुआ। बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने महात्मा गांधी से एक प्रेरणादायक मुलाकात के बाद इसका निर्माण किया।

शान्ति स्तूप देखने के बाद सभी रोवर रेंजर प्रकृति का आनन्द लेते हुए महाकाल मंदिर दार्जिलिंग पहुँचे। इस मंदिर का निर्माण 1782 में लामा दोरजे रिनजिंग द्वारा करवाया गया था। यह एक शिव को समर्पित हिन्दु मंदिर है जो हिन्दु त्रिमूर्ति देवों में शामिल है। यह वैधशाला हिल के उपर स्थित है और यह हिन्दु और बौद्ध धर्म का अद्वितीय धार्मिक स्थल है जहां दोनों धर्मों के लोग सौहार्द्रपूर्ण ढ़ग से मिलते है।

मॉल रोड़ दार्जिलिंग पर सुबह या शाम को स्थानीय लोग एवं पर्यटक अपने परिवार के साथ टहलते है। इस रोड़ को भानु भक्त सारणी के नाम से भी जाना जाता है जो नेपाली राष्ट्रीय कवि है, इनकी विशाल प्रतिमा भी लगाई गई है। यहां का दृश्य बड़ा ही अद्भुत एवं मन को खुशी देने वाला है। यहां पर सभी ने घुड़सवारी एवं फोटोग्राफी का आनन्द लिया। सांय 8 बजे वापस बैस कैम्प पहुंचकर चाय और भोजन का आनन्द लिया, तत्पश्चात आगामी दिवस भ्रमण हेतु सभी को संचालक दल द्वारा जानकारी प्रदान की गई।

तृतीय दिवस(10.06.2023)

प्रातःकाल 5 बजे जागरण के बाद बी.पी.सिक्स, ध्वजारोहण, अल्पाहार करके अपने–अपने भोजन पैकेट लेकर निर्धारित गाड़ियों में बैठकर स्थानीय दर्शनीय स्थानों का अवलोकन करने हेतु रवाना हुए।

आज सभी बेहद आल्हादित थे क्योंकि जिस शहर में हम सब रूके थे उसी का गहनता के साथ आनन्दमयी क्षण बिताये जाने थे।

सबसे पहले हम पाईन फोरेस्ट पहुँचे। 200 से 300 फिट बड़े–बड़े पाईन के वृक्ष देखकर हर किसी ने दांतो तले अंगुली दबा ली। लोगों ने बताया कि एक एक वृक्ष की कीमत लगभग 1–1 लाख रूपये है। यहां मनमोहक दृश्य मन को आल्हादित करने वाला था।

पाईन फोरेस्ट के बाद हम चिमनी पहुँचे। चिमनी का निर्माण 1839 में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा किया गया था। यहां से अंग्रेज ऑफिसर अपनी हुकुमत चलाया करते थे। लाल रंग की विशाल चिमनी मंत्र मुग्ध करने वाली है। चिमनी के आस–पास बड़े ही मनोहारी दृश्य देखने को मिले जो हमे सम्मोहित कर रहे थे। इसकी ऊँचाई 24 फिट है।

चिमनी के बाद हम डोविल फोरेस्ट म्यूजियम पहुँचे। म्यूजियम बहुत ही शानदार एवं ज्ञानवर्द्धक था। यहां पर विभिन्न प्रकार के जंगली जानवरों, विभिन्न प्रकार के सांपों, तितलियों आदि प्रदर्श सजीवता का परिचय दे रहे थे तथा कुर्सियांग में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के लकड़ियों का सजीव प्रदर्शन यहां किया गया है। यह संग्राहालय अपने आप में अनूठा और अजूबा है। यहां पर हमने ऐसी प्रजातियां देखी है जो जीवन में आज तक नहीं देख पाये थे।

हनुमान मंदिर, कुर्सियांग के आसपास की प्रकृति बहुत ही खुबसूरत, आकर्षक एवं घूमने लायक है। यह मूर्ति गोरखा प्रादेशिक प्रशासन द्वारा वर्ष 2021 में हनुमान जयन्ति के शुभ अवसर पर निर्मित करवाई गई थी। यह हनुमान प्रतिमा 40 फिट ऊँची है जो नया बस्ती क्षेत्र में कैस्टलटन टी कम्पनी के अन्तर्गत सुन्दर गौरी शंकर चाय बागान के बीच स्थित है इस जगह से सूर्यास्त का दृश्य बड़ा ही मंत्र मुग्ध करने वाला है। यहां पर सभी ने जी भरकर फोटोग्राफी एवं प्रकृति के नजारें का लुत्फ उठाया।

हनुमान मंदिर दर्शन के बाद हम सभी ने ताजी सुभाषचन्द्र बोस संग्रहालय पहुँचे। यह एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है जो भारत के सबसे प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों में से एक 'नेताजी सुभाषचन्द्र बोस' को समर्पित है। यह संग्रहालय कुर्सियांग शहर से लगभग 4 किलोमीटर दूर है। जिस इमारत में संग्रहालय स्थित है वह नेताजी के बड़े भाई की है और गिद्धा पहाड़ में स्थित है। संग्रहालय में मौजूद विभिन्न पत्रों, तस्वीरों और यादगार वस्तुओं के माध्यम से देश के स्वतंत्रता संग्राम के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। 1996 में राज्य सरकार ने इसे अपने कब्जे में ले लिया और इसका पुनर्निर्माण कर 20 मई 2005 को आमजन के लिए खोला गया। यहां का वातावरण व्यक्ति को संतुष्ट और मंत्रमुग्ध कर देता है। गिद्धा व्यू पॉईण्ट में बेहतरीन और मन को लुभावने वाला स्थान है यहां से प्रकृति का अद्भुत मन को आल्हादित करने वाला मनमोहक नजारा देखा जा सकता है।

चतुर्थ दिवस (11.06. 2023)

आज का दिन हमारे लिये बहुत ही खास था क्योंकि आज सभी को नेपाल बॉर्डर में जाने का सौभाग्य मिलने वाला था।

मुझे कुछ कहना है

बड़ी मुद्दतों से सजाया था सपना
दार्जिलिंग आकर बन गया वो अपना

भारत के अनेक प्रांत अपनी खुबसूरती और नैसर्गिक सौन्दर्य से परिपूर्ण हैं। ऐसा ही एक स्थान दार्जिलिंग अपने आप में नजारों की छटा बरसाता हैं। 11 जून 2023 को जलपाईगुड़ी, उदयपुर से सिधी ट्रेन से उतरे। रात्रि विश्राम जलपाईगुड़ी किया। प्रात: 6.00 बजे जलपाईगुड़ी से कुर्सियांग के लिये रवाना होकर कुर्सियांग केम्प स्थल पर पहुँचे।

शिविर कार्यक्रम के अनुसार झण्डारोहण, प्रार्थना बीपी सिक्स, केम्पफायर आदि सभी कार्यक्रम व्यवस्थित और योजनाबद्ध थे। 12 जून को प्रथम दिन ट्रेकिंग के साथ यात्रा शुरू हुई और प्रत्येक दिन निर्धारित समय पर यात्रा शुरू होती और समयानुसार सायं समाप्त होती। जो भी नैसर्गिक स्थान हमने देखे, वो वास्तव में बहुत ही खुबसुरत, खुशनुमा व दिल को बाग-बाग करने वाले थे।

शिविर में सभी व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी। चूंकि महिला होने के नाते मेरा कैम्प संचालक से अनुरोध है कि गाइड यूनिफार्म भ्रमण शिविर में सलवार कुर्ता किया जावे, ताकि महिलाओं को चढने, उतरने में आसानी रहे और भ्रमण का पूर्ण आनन्द ले सकें।

मैं पूरे उदयपुर परिवार की और से शिविर संचालक को साधुवाद देना चाहती हूं, जिन्होंने इस भ्रमण को यादगार बना दिया।

इसी स्मृति के साथ उदयपुर मण्डल से
गाइडर शीला पोखरना

प्रातःकाल 5 बजे जागरण के बाद बी.पी. सिक्स, ध्वजारोहण, अल्पाहार करके अपने–अपने भोजन पैकेट निर्धारित गाड़ियों में बैठकर दर्शनीय स्थानों का अवलोकन करने हेतु रवाना हुए।

पाईन फोरेस्ट होते हुए हम सिमाना व्यू पॉइण्ट पहुँचे। यहां का दृश्य बड़ा ही मनमोहक खुशमिजाज एवं मन को आनन्दित करने वाला था। सिमाना व्यू पॉइण्ट से नेपाल का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। यहां की वादियां मन मोहने वाली एवं पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। यहां एक बड़ा मार्केट भी था, जिसमें सभी ने मनचाही वस्तुएं खरीदी और याद्दास्त के तौर पर अपने साथ लेकर आयें।

अब बारी थी नेपाल के अन्दर जाने की। मन बड़ा ही उल्लासित, आनन्दित था, क्योंकि नेपाल कला धर्म और अनगिनत प्राकृतिक सम्पदाओं का धनी देश और एक प्राचीन राष्ट्र है। यहां उच्च हिमालयी प्रदेश का चांदी जैसा सफेद हिमालयी भू भाग, ऊँचे–ऊँचे पहाड़, सदाबहार जंगल और धान का कटोरा कहा जाने वाला मैदानी भू भागों की एक श्रृंखला बनी हुई है।

हिमालय की बर्फ पिघलकर अनेक नदियों का रूप लेती है जो उछल–उछलकर गड़गड़ाहट के साथ अपनी उपस्थिति जताती है।

भगवान शंकर का प्रिय क्षेत्र अनेक ऋषि–मुनियों की तपोभूमि, मन की शान्ति, धार्मिक भावन, मुक्ति की कामना और कुछ नये अनुभव के लिए भारतीय पर्यटक श्री पशुपति नाथ के दर्शन करने आते है। यह महर्षि वाल्मिकी का कार्यक्षेत्र रहा है। महान धर्म ग्रन्थ रामायण में वर्णित राजा जनक का राज्य और आदर्श नारी माता सीता की जन्म भूमि जनकपुर नेपाल में ही है।

विश्व में नेपाल एक ऐसा राष्ट्र है जहां कभी स्वतंत्रता दिवस नहीं मनाया जाता है क्योंकि यह राष्ट्र कभी परतंत्र नही हुआ, कभी अन्य देश का उपनिवेश नही रहा। यहां के सीढ़ीनुमा खेत, दुर्लभ शेर, गेण्डा जैसे अन्य जन्तु, अनेक प्रकार के पक्षी, पौधें, फूल और तितलियां, अनमोल जड़ी–बूटियां, धार्मिक महत्व के मठ, मंदिर, घाट जैसी सांस्कृतिक निधियां हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है।

पशुपति नेपाल बॉर्डर से हम सब मुख्य मार्केट पहुँचे। यहां की हसीन वादियां, सुरम्य वातावरण, मनमोहक फूलवारी का भरपूर आनन्द लिया। यहां के मुख्य बाजार से सभी ने किफायती रेट पर खरीददारी की।

पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के मिरिक उपखण्ड में मिरिक सीढ़ी ब्लॉक में गोपाल धारा टी एस्टेट एक महत्वपूर्ण चाय बागान है जो 320 हैक्टेयर में फैला हुआ है तथा सोना चाय समूह के अन्तर्गत इसका मालिकाना हक है। यहां उत्पादित चाय बहुत ही उच्च क्वालिटी की मानी जाती है। यहां पर विभिन्न फिल्मों की शूटिंग भी समय समय पर की जाती है। सभी रोवर रेंजर ने यहां पर भरपूर आनन्द उठाया।

गोपाल धारा टी एस्टेट के बाद हम सभी मिरिक झील पहुँचे। मिरिक झील प्राकृतिक सुन्दरता का अनमोल नमूना है, इसकी गहराई 27 फुट है। इस झील का सौन्दर्य चांदनी रात में और भी निखर जाता है। सभी ने इस झील में बोटिंग का आनन्द उठाया और यहां की सुन्दर मछलियों को देखकर मन बड़ा आल्हादित हुआ। इस झील पर एक पुल भी बना हुआ है जो अपनी आर्किटेक्चर संरचना के लिए प्रसिद्ध है।

मिरिक के सीढ़ीनुमा हरे–भरे चाय के बागान पर्यटकों को आनन्दित कर देते है। ढालदार ढलानों पर बने ये चाय के बागान ढलानों की सुन्दरता में भी चाय चांद लगाते है। यहां सन्तरों के बागान भी है जो काफी बड़े क्षेत्र में फैले हुए है। यहां से मैदानों और बर्फ से ढ़की चोटियों के सुन्दर दृश्य देखने के आनन्ददायी पल नसीब होते है। यहां पर सभी ने फोटोग्राफी, खरीददारी और मनपसंद व्यंजनों का आनन्द उठाया।

अब हम सोरिनी व्यू पॉइण्ट पहुँचे, जहां से बहुत ही आकर्षक एवं सुन्दर

नजारा देखने को मिला। व्यू पॉइण्ट हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। यहां से चाय के बागानों और प्रकृति का नजारा देखते ही बन रहा था। सभी ने यहां के खूबसुरत पलों को कैमरे में कैद किया।

अब पहुँचे दूधिया नदी। इस नदी का पानी दूध की तरह नजर आता है। यहां का मनोरम दृश्य व शान्त वातावरण हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां पर सशस्त्र बलों की एक शूटिंग रेंज है, जिसका उपयोग नियमित रूप से किया जाता है। दूधिया क्षेत्र बेहरतीन चाय बागानों से घिरा हुआ है जैसे लोंग व्यू टी गार्डन, गयाबारी टी गार्डन, मेरीऐन बारी टी गार्डन और पानीघाटा टी गार्डन आदि। यहा बालाशोहन नदी ही है जो हरियाली से चारों ओर प्राकृतिक सौन्दर्यता से अटी पड़ी है। प्रकृति ने इस स्थान को प्रचुर मात्रा में आशीर्वाद दिया है जो इसे ओर अधिक मनमोहक बनाता है। यहां ग्रामीण भारत की अनुभूति आज भी मौजूद है। सभी रोवर रेंजर ने यहां पर नदी के पानी में जी भरकर अठखेलियां की, आनन्द की अनुभूति प्राप्त की।

सांय सभी ने बेस कैम्प पहुँच कर चाय का आनन्द लिया एवं विशाल कैम्प फायर में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। रात्रि भोजन के बाद सभी ने अगले दिन के निर्देशों सहित विश्राम किया।

अंतिम दिवस

(12.06.2023)

प्रातः अल्पाहार के बाद पैकिंग की गई। सभी ने खरीदे गये सामान को तरीके से बैग में जमाया, तत्पश्चात शिविर की उपस्थिति प्रमाण–पत्र वितरित किये गये। अन्य सूचनाएं तथा आवश्यक कार्यवाही पूरी की गई। शिविर के संस्मरण साझा हुए। हर कोई कह रहा था गजब है यह शिविर, आगे भी ऐसे

मौके आयेंगे तो जरूर शरीक होंगे।

दोपहार का भोजन, अन्तिम वार्ता और राष्ट्रगान के साथ शिविर का समापन हुआ।

अन्तिम समय विदाई की वेला में रोवर रेंजर के आँखों में बिछुड़ने का गम। वो चन्द लम्हे खुशी के, बिताये पल सबको रह–रह कर याद आ रहे थे। संचालक दल ने सभी को ससम्मान विदाई दी और सभी अपने घर के लिए रवाना हो गये।

कुर्सियांग की मुख्य विशेषता यहां हर घर के अन्दर एवं बाहर विभिन्न प्रकार के फूलों की किस्में देखने को मिली, चाहे गरीब हो या अमीर सभी के घर रंग बिरगें फूलों से सजे हुए नजर आये। यहां के लोगों का प्रकृति के साथ इस प्रकार का अनूठा प्रेम दिल को छू गया।

विशेष :

शिविरावधि में राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन ने शिरकत कर सभी संभागियों को आशीर्वचन दिया और सभी के संग शिविर भ्रमण का आनन्द लेने के साथ–साथ सभी को यहाँ के चाय बागान व वनस्पतियों के बारे में ज्ञानवर्द्धक जानकारी से भी अवगत कराया। दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) के स्टेट कमिश्नर (कब) व जिला मुख्य आयुक्त श्री जोगेन्द्र प्रसाद का सान्निध्य भी सभी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। संचालक मण्डल ने श्री जोगेन्द्र प्रसाद एवं कुर्सियांग प्रशिक्षण शिविर के पदाधिकारियों को उच्च स्तरीय सुविधाएं मुहैया कराने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

12 से 16 जून तक आयोजित स्काउटर गाइडर शैक्षिक भ्रमण के दौरान संभागी स्काउटर गाइडर को भी प्रतिदिन उक्त वर्णित रोवर रेंजर शिविर की भांति ही भ्रमण कराया गया।

जयहिन्द

स्काउट की कलम से

अद्भुत...अविस्मरणीय

मुझे दार्जिलिंग, स्काउटर/गाइडर शैक्षिक भ्रमण 12 जून से 16 जून, 2023 में जाने का अवसर मिला और वहाँ मैंने बहुत आनंद लिया। वहां पर प्रकृति की सौन्दर्यता को देखा, ऐसा लग रहा था कि मानो हम प्रकृति की गोद में आ गये हों, वहां पर बार-बार जाने का मन कर रहा है।

निवेदन है कि इस प्रकार की हाइक से हम संगठन की गतिविधियों को गति एव मजबूती प्रदान करते हैं। परन्तु इस तरह के भ्रमण प्रोग्राम में अनुशासन को देखते हुए सिर्फ स्काउट भावना से अनुशासित रहने वाले सक्रिय स्काउटर/गाइडर को ही हाइक में चयनित किया जावें, जिससे संगठन की साख को आँच नहीं पहुँचे।

जय स्काउटिंग

शिव प्रसाद वर्मा (वरिष्ठ अध्यापक)
रा.उ.मा.वि., परसरामपुरा, नवलगढ़ (झुंझुनू)

उदयनिवास शिविर केन्द्र का ऐतिहासिक परिचय

उदयपुर से 13 कि.मी. दूर उदयसागर झील के किनारे अवस्थित है राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संगठन का मण्डल स्तरीय प्रशिक्षण केन्द्र– उदयनिवास।

शिविर केन्द्र स्थित महल

संक्षिप्त परिचय-

राजस्थान महाराणा उदयसिंह ने मेवाड़ की राजधानी को चित्तौड़ से सुरक्षित स्थान पर स्थानान्तरित करने का विचार किया। वीर विनोद के लेखक कविराज श्यामलदान के अनुसार महाराणा उदयसिंह शिकार खेलते समय उनको एक ऐसा स्थान दिखाई दिया जहाँ बेड़च नदी एक बड़े पहाड़ की तलहटी से गुजरती थी और उसके दोनों छोर पर पहाड़ियों की श्रृखंला रही। पहाड़ियों के मध्य इस झील का निर्माण सन् 1559 में प्रारम्भ हुआ और 1562 में पूर्ण हुआ। झील निर्माण के पश्चात धार्मिक अनुष्ठान के साथ विधिवत प्रतिष्ठा समारोह 4 अप्रैल 1565 तद्नुसार वैशाख शुक्ला 3 को हुआ। इस झील का पानी उदयपुर स्टेशन तक आता था। कालान्तर में इसके नाके को नीचे बैठाया। फलतः पानी मटून गाँव तक सीमित हो गया। झील के उस पार पाल पर महाराणा प्रताप एवं अकबर के सेनापति सवाई मानसिंह के मध्य समझौता वार्ता हुई। वार्ता असफल रही। राणा ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की फलतः प्रसिद्ध हल्दीघाटी का युद्ध हुआ।

झील के पश्चिम किनारे पर महाराणा फतहसिंह ने 125 वर्ष पूर्व आखेट के पश्चात् विश्राम करने हेतु एक भव्य भवन का निर्माण कराया। महाराणा फतहसिंह से महाराणा भुपालसिंह महाराज प्रमुख राजस्थान तक इस महल का उपयोग आखेट हेतु होता रहा। उदयनिवास के आस पास शिकारगाह (ओदी) के रूप में अवशेष अब भी बने हुए है जहाँ महाराणा शिकार किया करते थे। यही महल वर्तमान में उदयनिवास के नाम से स्काउट गाइड प्रशिक्षण केन्द्र का हिस्सा है।

भवन का वास्तु शिल्प व सौन्दर्य-

यह भवन उदयसागर झील के पश्चिमी तट पर एक ऊँची टेकरी पर अवस्थित है। भवन तीन भागों में विभक्त है। खुली भूमि पर भोजन शाला का भवन है। आज भी इसका भोजन शाला के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। महल में एक ऊँचे स्थान से पूर्व के द्वार से प्रवेश किया जाता है। अन्दर जाकर थोड़ा खुला चौक है, जिसमें नीम के वृक्ष है। चौक के दक्षिण में दो पटशालाएं हैं जो अभी गाइड विभाग के ठहरने के लिए उपयोग में ली जाती है। पुनः उत्तर की ओर विशाल महल है जिन में पूर्व की ओर से प्रवेश किया जाता है। अन्दर जाने पर चौक के मध्य में शिव विग्रह है जो संगमरमर की श्वेत छतरी में अवस्थित है। उत्तर की ओर सीढ़ियां चढ़कर प्रथम तल पर जाया जाता है। इन कक्षों में तत्कालीन चित्रकारों के द्वारा आखेट के चित्र चित्रित किये गये हैं। इनमें गजयुद्ध, सिंह आखेट, ऊँटों और सूअरों के चित्र सजीव बन पड़े है। उदयनिवास महलों का निर्माण राजमहल उदयपुर की तर्ज पर है। यहाँ अब भी उष्मायन कमरे को गरम बनाये रखने हेतु स्थान के साथ चिमनी निर्मित है। महल की दीवार में तांबे का पाइप जो शिकार के दौरान महल में विश्राम के दौरान उपस्थित महाराणा एवं महारानी के

जितेन्द्र कुमार उपाध्याय

उदयपुर के पूर्व मण्डल मुख्य आयुक्त

मुझे बचपन से ही घर में स्काउटिंग का वातावरण मिला, परन्तु इस बात का अफसोस सदैव रहेगा कि मैं स्वयं बाल्यावस्था में स्काउट नहीं रहा। मेरे पिताजी ने 26 वर्षों तक स्थानीय संघ के कोषाध्यक्ष का पदभार संभाला इसी कारण मुझे स्काउटिंग को नजदीक से देखने का मौका मिला। बचपन से इस संगठन की गतिविधियों और इनकी सेवा भावना को देखते हुए सक्रिय रूप से इससे जुड़ने की प्रबल इच्छा जाग्रत हुई, जो राजकीय सेवा में आने के बाद पूरी हुई। धर्मपत्नि भी गाइडिंग से जुड़ी रही है। मेरा ध्येय सदैव ही इस संगठन को योगदान का रहा है और इसके चलते ही मेरे द्वारा इस संगठन के विकास व विस्तार के उद्देश्य से किये गये कार्यों के फलस्वरूप मुझे धन्यवाद बैज से नवाज़ा गया।

अन्त में यही कहुँगा कि स्काउटिंग रूपी सेवा प्रकल्प से जुड़ कर जीवन सार्थक बना है।

उपरी कक्ष से नीचे कक्ष में आपसी वार्तालाप हेतु लगा हुआ है जो अब अवशेष रूप में स्थित है।

इस भवन के चारों ओर पानी रहता था। भवन में प्रवेश उस समय नाव से ही किया जाता था। समय के परिवर्तन के साथ अब आखेट नहीं स्काउटिंग की प्रवृत्तियों से बालक बालिकाओं को सुनागरिक बनाने के लिय ज्ञान, कौशल और दक्षता का विकास किया जाता है। भवन में जल, विद्युत और प्रसाधन की पर्याप्त व्यवस्था है। राज्य मुख्यालय की सहायता से निर्मित 400 छात्रों को बैठकर संबोधन करने हेतु सभा भवन है। श्री शिवकिशोर सनाढ्य, जो आरम्भ में स्थानीय संघ, उदयपुर के सचिव रहे; प्रसन्नता है कि वे नगर विकास प्रन्यास उदयपुर के अध्यक्ष रहे। उनके सद् प्रयत्नों से पक्की सीमेण्ट का परकोटा बन गया है।

स्वतंत्रता के पश्चात् यह भवन राजस्थान सरकार के अधीन आया। इस भवन को राजस्थान सरकार ने समाज कल्याण विभाग को आवंटित किया। समाज कल्याण विभाग की प्रवृत्तियां यहाँ से उदयपुर नगर में स्थानान्तरित हो गई। नगर से दूर होने के कारण कोई विभाग इसे ग्रहण करने को तैयार नहीं हुआ। स्वर्गीय केसरीलाल श्रीमाली, स्वर्गीय कालूलाल श्रीमाली के अनुज ने श्री मोहनलाल सुखाड़िया को निवेदन किया कि इस भवन को स्काउटिंग प्रवृत्ती के लिये उपलब्ध करा दिया जाये। श्री सुखाड़िया जी की अनुशंषा से राजस्थान के राज्यपाल महोदय के आदेश से सन 1958 ई. में इस भवन को मण्डल मुख्यालय के शिविर हेतु मण्डल कार्यालय उदयपुर को स्थानान्तरित कर दिया। परन्तु लिपिकीय त्रुटि से भवन तो आदेश में अंकित कर दिया पर भूमि नहीं लिखी गई। सन् 1958 ई. से निरन्तर प्रयत्न होते रहे, परन्तु सफलता 1999–2000 में प्राप्त हुई जिसका श्रेय तत्कालीन स्टेट चीफ कमिश्नर श्री अतुल कुमार गर्ग को जाता है। उनके प्रशंसनीय प्रयत्नों के फलस्वरूप आज भूमि और भवन का स्वामित्व हमें प्राप्त है। शिविर केन्द्र 21 बीघा 2 बीसवा क्षेत्र में फैला हुआ है। यहाँ सुविधा की दृष्टि से दो खुले मैदान, बीस कमरे, एक सभागार, दो स्नानाघर एवं शौचालय ब्लॉक, नौ पक्की हट्स, 14 छोलदारी लगाने हेतु चबूतरे, नलकूप, गीज़र, वाटर कूलर आदि सुविधा उपलब्ध है। इस स्थान पर मण्डल, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रवृत्तियाँ आयोजित होती है।

पूर्व संभागीय आयुक्त श्री भवानीसिंह देथा एवं पूर्व अतिरिक्त आयुक्त जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग एवं स्टेट कमिश्नर (गाइड) राजस्थान श्रीमती रूक्मणी आर. सिहाग की पहल एवं सहयोग से यहाँ एक सभागार 40X60 स्क्वायर फिट मय सेनिटेशन ब्लॉक हेतु 36.29 लाख, एडवेंचर इस्टिट्यूट हेतु 1.50 लाख रू. तथा स्काउट गाइड बैण्ड हेतु 50 हजार रूपये जनजाति विभाग द्वारा स्वीकृत किये गये, जिससे प्रशिक्षण केन्द्र और विकसित किया गया। यहाँ कार्य की काफी संभावनाएं है। आदर्श स्थिति बनाने हेतु सम्पूर्ण मण्डल परिवार इस ओर संलग्न है।

महल परिसर में रियासतकालीन चित्रकारी

कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर

स्वावलम्बन और स्वरोजगार के आधार स्तम्भ

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड द्वारा बालक/बालिकाओं में श्रम के प्रति निष्ठा, स्वावलम्बन, आत्मविश्वास आदि गुणों के विकास एवं ग्रीष्मावकाश के खाली समय के सदुपयोग की दृष्टि से प्रदेश में कौशल विकास प्रशिक्षण शिविरों (अभिरूचि एवं लघु उद्योग प्रशिक्षण केन्द्रों) का आयोजन एवं संचालन वर्ष 1974 से किया जा रहा है, जिनमें विभिन्न रोजगारोन्मुखी विषयों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 17 मई से 25 जून तक सम्पूर्ण प्रदेश में मण्डल, जिला, स्थानीय संघ (ग्रामीण व शहरी) व ग्रुप स्तर पर कुल 90 कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर संचालित किये गये, जिनमें 14013 सम्भागियों ने भाग लेकर कम्प्यूटर, सिलाई, कढ़ाई, वाद्ययंत्र, इंटीरियर डेकोरेशन, सॉफ्ट टॉयज, पेंटिंग, डांस, इंग्लिश स्पीकिंग, तैराकी, मेहन्दी, ब्यूटीशियन, जूड़ो कराटे, कुकिंग, जल सेवा, संगीत, बिजली का कार्य, केन वर्क, साज सज्जा, जरी वर्क, बंधेज, लघु उद्योग, इलेक्ट्रोनिक्स आदि विषयों का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

जिला	शिविर का स्तर	स्थान व संचालक/संचालिका का नाम	संभागी
अजमेर मण्डल में कुल 11 शिविरों में 1885 सम्भागी लाभान्वित			
अजमेर	मण्डल/जिला स्तर	रा. केन्द्रीय बा.उ.मा.विद्यालय पुरानी मण्डी अजमेर श्रीमती ओमकुमारी चौहान, सी.ओ. (गाइड)	150
	स्थानीय संघ स्तर (किशनगढ़)	स्काउट भवन, किशनगढ़ श्री विरेन्द्र कुमार शर्मा, (सचिव)	135
भीलवाडा	जिला स्तर	रा.बा.उ.मा.विद्यालय गुलमण्डी, भीलवाडा श्री विनोद कुमार घारू, सी.ओ. (स्काउट)	206
	स्थानीय संघ (शाहपुरा)	कैशव रा.उ.मा.विद्यालय. शाहपुरा (भीलवाडा) श्रीमती उर्मिला पाराशर (सचिव)	84
नागौर	जिला स्तर	रा.बा.उ.मा.विद्यालय गिनानी, नागौर श्रीमती मीनाक्षी भाटी, सी.ओ. (गाइड)	105
	स्थानीय संघ (मुडला)	वागेश्वरी विद्यामंदिर मारवाड मुंडला श्री गजेन्द्र गोपाला (सचिव)	350
टोंक	जिला स्तर	रा. दरबार उ.मा.विद्यालय टोंक श्रीमती आचू मीणा, सी.ओ. (गाइड)	306
	स्थानीय संघ (लाम्बाहरिसिंह)	रा.बा.उ.मा.विद्यालय लाम्बाहरिसिंह श्रीमती वीणा जाटोलिया, सचिव लाम्बाहरिसिंह	86
	स्थानीय संघ (देवली)	सी.बी.ई.ओ. कार्यालय परिसर देवली श्री द्वारका प्रकाश प्रजापत, (सचिव) देवली	158
	ग्रुप स्तर	रा.उ.मा.विद्यालय भरतला श्री गिरिराज गुर्जर सहा. कमिश्नर	143
	ग्रामीण स्तर	रा.उ.मा.विद्यालय दूनी श्री भंवर लाल कुम्हार (सहा. कमिश्नर)	162

भरतपुर मण्डल में कुल 09 शिविरों में 1088 सम्भागी लाभान्वित

भरतपुर	जिला स्तरीय	श्री अग्रसैन महिला पीठ महाविद्यालय रणजीत नगर, भरतपुर श्री राजेन्द्र प्रसाद मीणा	103
	स्थानीय संघ	शहीद सुबेदार खि. मि. रा. उ. मा. विद्यालय तुहिया श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता	80
धौलपुर	जिला स्तर	रा.बा.उ.मा.विद्यालय धौलपुर श्री गजेन्द्र त्यागी	100
	स्थानीय संघ	सी. सै. स्कूल मनीयां श्री ओमप्रकाश जोझा	75
	ग्रुप स्तर	चिनू पब्लिक स्कूल, जांम्बी श्री मनोज कुमार वर्मा	50
करौली	जिला स्तर	जिला मुख्यालय भवन, करौली श्री अनिल कुमार गुप्ता	225
	स्थानीय संघ (करौली)	मोन्टेसरी किडस एकेडमी इंग्लिश स्कूल, करौली श्री मुकेश कुमार सारस्वत	175
सवाईमाधोपुर	जिला/मण्डल स्तर	रा.रा.भा.स्का.गा. आवासन मण्डल जिला मु. सवाई माधोपुर श्रीमती दिव्या	105
	स्थानीय संघ स्तर (सवाईमाधोपुर)	नामदेव उ.मा.वि. शहर सवाईमाधोपुर श्री कमलेश शर्मा	175

बीकानेर मण्डल में कुल 15 शिविरों में 1950 सम्भागी लाभान्वित

बीकानेर	मण्डल/जिला स्तर	रा. गुरूद्वारा बा.उ.मा.विद्यामंदिर श्री जसवंत सिंह	151
	स्थानीय संघ स्तर (गंगाशहर)	संत श्री तुकाराम मा.वि. गंगाशहर श्री भवानी सिंह	139
चूरू	जिला स्तर	मेरी गोल्ड वर्ल्ड स्कूल, चूरू श्रीमती अभिलाषा मिश्रा	42
	स्थानीय संघ	तानिया बा.उ.मा.विद्यालय सरदारशहर श्री बाबू लाल	51
	ग्रुप स्तर	महात्मा गाँधी शषि, राजपुरा, तारानगर श्री दिलीप सिंह	202
हनुमानगढ़	जिला स्तर	उ.प्रा.विद्यालय सेक्टर नं. 6 हनुमानगढ़ जं. श्री भारत भूषण सी. ओ. स्काउट	110
	स्थानीय संघ स्तर (संगरिया)	रा.उ.मा.विद्यालय संगरिया श्री ओमप्रकाश कोटी	262
श्री गंगाानगर	जिला स्तर	महात्मा गांधी राज. हरिजन बस्ती, गंगानगर श्रीमती मोनिका यादव	164
	स्थानीय संघ	SDS उ.मा.वि सादुल शहर श्री रामकुमार गेदर	158
	ग्रुप स्तर	भारती गर्ल्स कॉलेज, लालगढ़, जाटान श्रीमती परमा	129
झुंझुनू	जिला स्तर	रा.राज्य भारत स्काउट/गाइड जिला मुख्यालय, झुंझुनू श्री महेश कालावत श्रीमती सुनिता कुमारी महला	162
	स्थानीय संघ स्तर (खेतड़ी नगर)	रा.उ.मा.विद्यालय खेतडी, नगर श्री जितेन्द्र कुमार सचिव/उप प्रधानाचार्य	80
	स्थानीय संघ स्तर (बगड़)	ज्योति विद्यापीठ सी.सै. स्कूल, बगड श्री वंशीलाल सचिव	135

	ग्रुप स्तर	श्री टिबडेवाल शिक्षण संस्थान, उ.मा.विद्यालय, गांरियासर श्री रामस्वरूप	95
	ग्रुप स्तर	ब्राइट फ्यूचर एकेडमी, मोडकी श्री नाहर सिंह गिल	70

जयपुर मण्डल में कुल 18 शिविरों में 2729 सम्भागी लाभान्वित

जयपुर	मण्डल/जिला स्तर	राज.राज्य भारत स्काउट व गाइड मण्डल मुख्यालय, जयपुर श्रीमती ऋतु शर्मा, सी.ओ. (गाइड)	308
	स्थानीय संघ (कोटपूतली)	सेठ लक्ष्मीचंद ज्ञानवती देवी सवाईका रा.बा.उ.मा.विद्यालय श्री रामबीर यादव	150
	स्थानीय संघ (झोटवाड़ा)	शहीद लेफ्टिनेंट पुनीतनाथ दत्त एवं शहीद मेजर योगेश अग्रवाल रा.उ.मा.विद्यालय मुरलीपुरा, बीड श्री पुष्पेन्द्र सिंह राठौड	100
	स्थानीय संघ (जयपुर)	वैदिक कन्या उ.मा.विद्यालय राजापार्क श्रीमती साधना रावत	140
	स्थानीय संघ (सांगानेर)	वीएसपीके इन्टरनेशनल स्कूल, प्रतापनगर श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा	75
	ग्रुप स्तर	रा.बा.उ.मा.विद्यालय माधोगढ, तूंगा, जयपुर श्री शिवशंकर प्रजापति	80
अलवर	जिला स्तर	महात्मा गाँधी रा.विद्यालय नयाबास अलवर श्रीमती कल्पना शर्मा, सी.ओ. (गाइड)	300
	स्थानीय संघ,	रा.उ.मा.विद्यालय मौजपुर, लक्ष्मणगढ श्री जमालुद्दीन खाँन	200
	स्थानीय संघ	रा.उ.मा.विद्यालय मुण्डावर श्री महेन्द्र सिंह चौहान	200
	ग्रुप स्तर	राजगुप्ता सभागार, अलवर श्रीमती राजगुप्ता	150
	ग्रुप स्तर	मित्तल स्कूल, अलवर श्रीमती इन्दु मित्तल	150
दौसा	जिला स्तर	महात्मा गाँधी रेलवे स्कूल, दौसा श्री प्रदीप सिंह, सी.ओ (स्काउट)	61
	जिला स्तर	महात्मा गाँधी रा.स्कूल गुप्तेश्वर रोड़, दौसा श्री संजीव रावत	72
सीकर	जिला स्तर	राधाकृष्ण मारू रा.बा.उ.मा.विद्यालय सीकर श्री बसन्त कुमार लाटा, सी.ओ. (स्काउट)	240
	स्थानीय संघ (दातां)	आदर्श विद्या मन्दिर उ.मा. विद्यालय, दातां श्री बाबू लाल कुमावत	171

	स्थानीय संघ (नीमकाथाना)	जमना देवी रा.उ.मा.विद्यालय खेतडी मोड, नीमकाथाना श्री दिलीप कुमार तिवाडी	156
	स्थानीय संघ (पाटन)	श्री जगन्नाथ दिवान रा.उ.मा.विद्यालय पाटन श्री शिशपाल सैनी	66
	स्थानीय संघ (लक्ष्मणगढ़)	ऋषिकुल विद्या पीठ, लक्ष्मणगढ़ श्री प्यारे लाल नायक	110

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड मण्डल मुख्यालय, बनीपार्क जयपुर के तत्वावधान में संचालित ग्रीष्मकालीन अभिरूचि शिविर का अनेक महानुभावों ने अवलोकन किया। शिविर में जूडो–कराटे, स्केटिंग, पेंटिंग, मेहन्दी, ब्यूटीशियन, सिलाई, तैराकी सहित अनेक विषयों का प्रशिक्षण प्राप्त कर 308 शिविरार्थी लाभान्वित हुए। इस दौरान जन प्रतिनिधियों एवं स्टेट पदाधिकारियों के सान्निध्य में प्रशिक्षणार्थी बालक–बालिकाओं के मनोबल में वृद्धि हुई।

राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन के मुख्य आतिथ्य में शिविर का समापन समारोह मनाया गया। समारोह के दौरान अतिथियों ने शिविर में तैयार की गयी वस्तुओं की प्रदर्शनी का अवलोकन कर प्रसन्नता ज़ाहीर करते हुए कहा कि संगठन द्वारा आयोजित इस शिविर के माध्यम से युवाओं का चँहुमुखी विकास होता है। खाली समय में समय का सदुपयोग करते हुए रोजगार के माध्यम को चुन सकते हैं, बालक बालिकाओं द्वारा अल्प समय में कई प्रकार की कलाकृतियों को सीख कर बनाना अचरज की बात है।

जोधपुर मण्डल में कुल 12 शिविरों में 2460 सम्भागी लाभान्वित

जोधपुर	जिला स्तर	रा.बा.उ.मा.विद्यालय महामंदिर, लाल मैदान, जोधपुर श्रीमती निशु कंवर, सी.ओ. (गाइड)	400
	स्थानीय संघ स्तर (फलोदी)	रा.उ.मा.विद्यालय मालियों का बास फलोदी श्री रतन सिंह	150
बाड़मेर	जिला स्तर	अन्तरी देवी रा.बा.उ.मा.विद्यालय बाडमेर श्री योगेन्द्र सिंह, सी.ओ. (स्काउट)	300
	स्थानीय संघ स्तर (बायतु)	रा.बा.उ.मा.विद्यालय बायतु श्री जैहाराम	150
जालौर	जिला स्तर	रा.उ.प्रा.विद्यालय, हनुमानशाला, जालौर श्री एम.आर.वर्मा, सी.ओ. (स्काउट)	200
	स्थानीय संघ (सांचौर)	स्काउट भवन स्थानीय संघ, सांचौर श्री लादूराम विश्नोइ (सचिव)	150
जैसलमेर	जिला स्तर	रा.उ.मा.विद्यालय, जैसलमेर श्री सवाईसिंह (सी.ओ.) स्काउट	250
	स्थानीय संघ	रा.उ.मा.विद्यालय पोकरण श्री शिवशंकर शर्मा	160
पाली	जिला स्तर	माँ आशापुरा उ.मा.विद्यालय पाली श्री गोविन्द प्रसाद मीणा, सी.ओ. (स्काउट)	250
	स्थानीय संघ स्तर (देवली आऊवा)	रा.उ.मा.विद्यालय जोडकिया, देवली आऊवा श्री मीठा लाल गर्ग, रा.उ.प्रा.विद्यालय जोउकिया, देवली	150
सिरोही	जिला स्तर	रा.विशिष्ट पूर्व मा.विद्यालय (बालमंदिर) सिरोही श्रीमती सुनीता मीना, सी.ओ. (गाइड)	200
	स्थानीय संघ	रा.उ.प्रा.विद्यालय काँटल श्री मूल सिंह भाटी	100

कोटा मण्डल में कुल 11 शिविरों में 1996 सम्भागी लाभान्वित

कोटा	मण्डल स्तर/जिला स्तर	एलजेब्रा सी. सै. स्कूल, दादाबाड़ी, कोटा सुश्री कृतिका पाराशर सी.ओ. (गाइड)	350
बारां	जिला स्तर/स्थानीय संघ स्तर	रा.उ.मा.विद्यालय झालावाड़ रोड़ तेल फैक्ट्री, बारां श्री बृज सुन्दर मीणा, सी.ओ. (स्काउट)	160
बून्दी	जिला स्तर/स्थानीय संघ स्तर	रा.उ.मा.विद्यालय चौगान गेट, बून्दी श्रीमती प्रीति कुमारी, सी.ओ. (गाइड)	300
झालावाड़	जिला स्तर	जिला मुख्यालय, झालावाड श्री रामकृष्ण शर्मा, सी.ओ. (स्काउट)	163

	स्थानीय संघ	रा.उ.प्रा.विद्यालय मैंन मार्केट अकलेरा श्री चांदमल यादव	193
	स्थानीय संघ	महात्मा गाँधी रा.विद्यालय सुनेल श्री सुवालाल जाट	146
	स्थानीय संघ	किड्स प्राईड स्कूल, खानपुर श्री हंसराज पांचाल	115
	स्थानीय संघ	सै.आ.पौ. रा.उ.मा.विद्यालय भवानी मण्डी श्री राजू लाल गुर्जर	265
	ग्रुप स्तर	स्वा.विद्यालय रा. मॉडल स्कूल, डग श्री कैलाश नाथ योगी	104
	ग्रुप स्तर	रा.बा.उ.मा.विद्यालय बकानी श्री बद्री लाल बारबर	76
	ग्रुप स्तर	रा.बा.उ.मा.विद्यालय चौमेला श्रीमती प्रियंका	124

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड मण्डल मुख्यालय, कोटा के तत्वावधान में संचालित ग्रीष्मकालीन अभिरूचि शिविर का अनेक पदाधिकारियों ने अवलोकन किया। शिविर में पेंटिंग, मेहन्दी, ब्यूटीशियन, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई सहित अनेक विषयों का प्रशिक्षण प्राप्त कर 350 शिविरार्थी लाभान्वित हुए। शिविर के दर्शक दिवस समारोह के अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा तैयार सामग्री की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसे देखकर सभी अतिथियों ने इन शिविरों की उपयोगिता को सराहा।

उदयपुर मण्डल में कुल 14 शिविरों में 1905 सम्भागी लाभान्वित

उदयपुर	जिला स्तर	द विजन एकेडमी स्कूल, उदयपुर श्रीमती विजयलक्ष्मी वर्मा, सी.ओ (गाइड)	220
	मण्डल स्तर	हेप्पी होम सी. सै. उदयपुर श्री सुरेन्द्र कुमार पाण्डे, सी.ओ. (स्काउट)	85
बांसवाडा	जिला स्तर	म.गा.रा.वि खान्दू कॉलोनी, रानूतन उ.मा.विद्यालय बांसवाडा श्रीमती शबनम शेख	155
	स्थानीय संघ स्तर	हिम्मत स्कूल परिसर गढ़ी श्री रमण लाल खांट	115
	स्थानीय संघ स्तर	म.गा.रा.विद्यालय रैयाना श्री राजमल ताबियार	125
चितौडगढ	जिला स्तर	एमजीजीएस चितौडगढ़ श्री चन्द्र शंकर श्रीवास्तव, सी.ओ.(स्काउट)	185
	स्थानीय संघ	रा.बा.उ.मा.विद्यालय चितौडगढ़ श्रीमती रेखा वैष्णव	65
डूंगरपुर	जिला स्तर	रा. महारावल उ.मा.विद्यालय डूंगरपुर श्री जितेन्द्र भाटी, सी.ओ. (स्काउट)	95
	स्थानीय संघ	रा. महिपाल उ.मा.विद्यालय 06 सागवाडा श्री मोहनलाल पाटीदार	200
प्रतापगढ़	जिला स्तर	रा.उ.मा.विद्यालय अवलेश्वर श्रीमती रेखा शर्मा, सी.ओ. (गाइड)	120
	स्थानीय संघ	रा.उ.मा.विद्यालय अरनोद श्री रमेश चन्द मीणा	175
	स्थानीय संघ	स्काउट कार्यालय धरियावद श्री नरेन्द्र सिंह सिसोदिया	130
	ग्रुप स्तर	रा.बा.उ.मा.विद्यालय झासडी श्री लक्ष्मण लाल मीणा	85
राजसमंद	जिला स्तर	रा.बा.उ.मा.विद्यालय कांकरोली श्री धर्मेन्द्र गुर्जर	150

हमारा स्वास्थ्य

सूर्य से करें प्यार

-स्काउट गाइड ज्योति डेस्क

सूर्य से हमें प्रकाश ही नहीं मिलता बल्कि इससे कई सामान्य और खतरनाक बीमारियों से बचाव होता है, इससे हमारे शरीर को विटामिन डी मिलता है, जिससे हड्डियाँ मजबूत होती हैं।

1-धूप सेंकने के फायदे

धूप हमें प्रकाश ही नहीं देता है बल्कि इससे हमारे स्वास्थ्य को कई तरह के फायदे भी होते हैं। सूर्य से निकलने वाली रोशनी में विटामिन डी होता है, जिसकी कमी से शरीर में मेटाबोलिक हड्डियों की बीमारी हो जाती है जो युवाओं में होने वाली गंभीर बीमारी है। यह हमारे शरीर में विटामिन डी की कमी को पूरा करता है। सूर्य के प्रकाश के लाभ सिर्फ विटामिन डी तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसके कई अन्य लाभ भी होते हैं और कई दूसरी बीमारियों से भी बचाव होता है।

2-अच्छी नींद आती है

धूप सेंककर आप रात में अच्छी नींद ले सकते हैं। दरअसल सूर्य की रोशनी में बैठने से शरीर में मेलाटोनिन नाम का हार्मोन विकसित होता है, जिससे रात में अच्छी नींद आती है। इस तरह अनिद्रा की बीमारी भी इससे दूर जाती है। यानी रात में बेहतर नींद के लिए सूर्य से प्यार कीजिए।

3-वजन घटायें

वजन घटाने के लिए आप कई तरीके आजमाते और बहुत मेहनत भी करते हैं। लेकिन आप यह जानकर हैरान न हों कि वजन कम करने में सूर्य आपकी सहायता कर सकते हैं। दिन में धूप में बैठने से आपको वजन घटाने में सहायता मिल सकती है। एक शोध के मुताबिक यह बात सामने आई है कि सूर्य के प्रकाश और बीएमआई के बीच एक अच्छा संबंध होता है।

4-ठंड दूर भगायें

अगर आप सर्दी के मौसम में ठंड से कांप रहे हैं तो सूर्य की रोशनी में जाइये, यह एक प्राकृतिक अलाव है जो ठंड दूर करेगा और आपको बीमारियों से भी बचायेगा।

5-हड्डियाँ मजबूत बनायें

हड्डियों को सही तरीके से पोषण न मिलनने से हड्डियां कमजोर हो जाती हैं और उम्र बढ़ने के साथ हड्डियों से संबंधित बीमारियां जैसे – गठिया, गाउट आदि होने की संभावना बढ़ जाती है। जबकि सूर्य की रोशनी में बैठने से हड्डियां मजबूत होती हैं क्योंकि इसमें विटामिन डी होता है।

6-इम्यून सिस्टम को मजबूत बनायें

इम्यून सिस्टम अगर कमजोर हो जाये तो पेट से संबंधित कई तरह के रोग हो जाते हैं, इसलिए इसे मजबूत बनाये रखना जरूरी है। धूप से शरीर का इम्यून सिस्टम मजबूत हो जाता है। सूर्य से निकलने वाली अल्ट्रा वॉयलेट किरणें इम्यून सिस्टम की हाईपर एक्टिविटी को नकारती हैं और सोराईसिस जैसी बीमारियों से बचाव करती हैं।

7-उम्र बढ़ती है

अगर आपकी चाहत लंबी उम्र पाने की है तो नियमित रूप से धूप से स्नान कीजिए। क्योंकि यह खून जमने, डायबिटीज एवं ट्यूमर को ठीक करता है, प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाता है एवं पैरों में खून जमने का खतरा बिल्कुल नहीं रहता। ठंडे क्षेत्र में शीतकाल में यह खतरा ज्यादा रहता है। यह डायबिटीज जैसी बीमारी से भी बचाव करता है और अन्य बीमारियों से बचाता है। अगर ये सारी समस्यायें न हों तो उम्र बढ़ेगी ही।

8-बांझपन दूर करे

यदि पुरुष बांझपन के शिकार हैं तो उनके लिए सूर्य धूप रामबाण दवा की तरह है। धूप सेंकने से शुक्राणुओं की गुणवत्ता में सुधार आता है। खून में सूर्य धूप से मिले विटामिन डी के बढ़ने के कारण ऐसा होता है। इसके अलावा यह वियाग्रा दवा की भांति भी काम करता है। यह टेस्टोस्टोरेन हार्मोन के स्राव को भी बढ़ाता है।

9-दिमाग को स्वस्थ रखे

सूर्य से निकलने वाले प्रकाश में मौजूद विटामिन डी से दिमाग स्वस्थ रहता है। विटामिन डी भविष्य में होने वाली बीमारी सीजोफ्रेनिया (पागलपन की बीमारी) के खतरे को कम करता है। यह दिमाग को स्वस्थ रखता है और इसके संतुलित विकास में सहायता प्रदान करता है। गर्भवती महिला के धूप सेंकने से यह लाभ बच्चे को भी मिलता है।

10-दिल के रोगों से बचाये

सूर्य से मिलने वाले विटामिन डी से हड्डियां और मांसपेशियां मजबूत होती है और कैंसर का खतरा कम होता है। यह मेटाबॉलिज्म को सुधारता है, जिससे मधुमेह एवं हृदय रोग काबू में रहते हैं। धूप दिल की बीमारियों को रोकने में मददगार होती है।

हमारे महापुरुष

बलिदानी अमृता देवी

-स्काउट गाइड ज्योति डेस्क

अमृतादेवी बलिदान की अमर गाथा को शुरु करने से पहले बिश्नोई समाज के संस्थापक महान सामाजिक संत गुरू भगवान जम्भेश्वर (जंभोजी) महाराज (1451–1536) को नमन करते हैं। उन्होंने 29 नियम बताये, इन नियमों का पालन करने वाले लोग बिश्नोई जन कहलाये। उन्होंने ऐसे बिश्नोई समाज का निर्माण किया जो नियमों की पालना में अपने प्राणों की बाजी लगा दे !!

आज सारी दुनिया में पर्यावरण संरक्षण की चिंता में पर्यावरण चेतना के लिये सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। भारतीय जनमानस में पर्यावरण संरक्षण की चेतना और पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों की परम्परा सदियों पुरानी है। हमारे धर्मग्रंथ, हमारी सामाजिक कथायें और हमारी जातीय परम्परायें हमें प्रकृति से जोड़ती है। प्रकृति संरक्षण हमारी जीवन शैली में सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय रहा है।

चिपको आन्दोलन का अर्थ एवं लक्ष्य :

चिपको आन्दोलन का सांकेतिक अर्थ यही है कि पेड़ों को बचाने के लिये पेड़ों से चिपक कर जान दे देना, परन्तु पेड़ों को नहीं काटने देना है। अर्थात प्राणों की आहुति देकर भी पेड़ों की रक्षा करना है। इसी तरह बिश्नोई समाज मरते दम तक पेड़ों से चिपक कर उनकी रक्षा सदियों से करता आया है और कर रहा है। 1730 में खेजड़ली में पेड़ों की रक्षा के लिए बिश्नोई समाज ने जो बलिदान दिया है वो मानव इतिहास में अद्वितीय है।

प्रकृति संरक्षण के लिये प्राणोत्सर्ग कर देने की घटनाओं ने समूचे विश्व में भारत के प्रकृति प्रेम का परचम फहराया है। अमृता देवी और पर्यावरण रक्षक बिश्नोई समाज की प्रकृति प्रेम की एक घटना हमारे राष्ट्रीय इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित है। सन् 1730 में राजस्थान के जोधपुर राज्य में छोटे से गांव खेजड़ली में घटित घटना का विश्व इतिहास में कोई सानी नहीं है। सन् 1730 में जोधपुर के राजा अभयसिंह को युद्ध से थोड़ा अवकाश मिला तो उन्होंने महल बनवाने का निश्चय किया। नया महल बनाने के कार्य में सबसे पहले चूने का भट्टा जलाने के लिए ईंधन की आवश्यकता बतायी गयी। राजा ने मंत्री गिरधारी दास को लकड़ियों की व्यवस्था करने का आदेश दिया, मंत्री गिरधारी दास की नजर महल से करीब 25 किलोमीटर दूर स्थित गांव खेजड़ली पर पड़ी। मंत्री गिरधारी दास व दरबारियों ने मिलकर राजा को सलाह दी कि पड़ोस के गांव खेजड़ली में खेजड़ी के बहुत पेड़ है, वहां से लकड़ी मंगवाने पर चूना पकाने में कोई दिक्कत नहीं होगी। इस पर राजा ने तुरंत अपनी स्वीकृति दे दी। खेजड़ली गांव में अधिकांश बिश्नोई लोग रहते थे। बिश्नोईयों में पर्यावरण के प्रति प्रेम और वन्य जीव सरंक्षण जीवन का प्रमुख उद्देश्य रहा है। खेजड़ली गांव में प्रकृति के प्रति समर्पित इसी बिश्नोई समाज की 42 वर्षीय महिला अमृता देवी के परिवार में उनकी तीन पुत्रियां आसु, रतनी, भागु बाई और पति रामू खोड़ थे, जो कृषि और पशुपालन से अपना जीवन–यापन करते थे।

अमृता देवी बलिदान : एक सच्ची कथा

खेजड़ली में राजा के कर्मचारी सबसे पहले अमृता देवी के घर के पास में लगे खेजड़ी के पेड़ को काटने आये तो अमृता देवी ने उन्हें रोका और कहा कि 'यह खेजड़ी का पेड़ हमारे घर का सदस्य है यह मेरा भाई है इसे मैंने राखी बांधी है, इसे मैं नहीं काटने दूंगी।' इस पर राजा के कर्मचारियों ने प्रति प्रश्न किया कि 'इस पेड़ से तुम्हारा धर्म का रिश्ता है, तो इसकी रक्षा के लिये तुम लोगों की क्या तैयारी है। इस पर अमृता देवी और गांव के लोगों ने अपना संकल्प घोषित किया 'सिर साटे रूख रहे तो भी सस्तो जाण', अर्थात् हमारा सिर देने के बदले यह पेड़ जिंदा रहता है तो हम इसके लिये तैयार हैं। उस दिन तो पेड़ कटाई का काम स्थगित कर राजा के कर्मचारी चले गये, लेकिन इस घटना की खबर खेजड़ली और आसपास के गांवों में शीघ्रता से फैल गयी।

कुछ दिन बाद मंगलवार 21 सितम्बर 1730 ई. (भाद्रपद शुक्ल दशमी, विक्रम संवत 1787) को मंत्री गिरधारी दास लाव–लश्कर के साथ पूरी तैयारी से सूर्योदय होने से पहले आये, जब पूरा गाँव सो रहा था। गिरधारी दास भण्डारी की पार्टी ने सबसे पहले अमृता देवी के घर के पास में लगे खेजड़ी के हरे पेड़ो की कटाई करना शुरु किया तो, आवाजें सुनकर अमृता देवी अपनी तीनों पुत्रियों के साथ घर

से बाहर निकली। उसने ये कृत्य बिश्नोई धर्म में वर्जित (प्रतिबंधित) होने के कारण उनका विरोध किया। तब मंत्री के लोगों ने द्वेषपूर्ण भाव से अमृता देवी को उसके पेड़ छोड़ने के बदले रिश्वत में धन मांगा। उसने उनकी मांग मानने से इन्कार कर दिया और कहा कि ये हमारी धार्मिक मान्यता का तिरस्कार व घोर अपमान है। उसने कहा कि इससे अच्छा तो वह हरे पेड़ो को बचाने के लिये अपनी जान दे देगी। और इसके साथ ही उद्घोष किया 'सिर साटे रुख रहे तो भी सस्तो जाण' और अमृता देवी गुरू जांभोजी महाराज की जय बोलते हुए सबसे पहले पेड़ से लिपट गयी। क्षण भर में कुल्हाड़ी से उनकी गर्दन काटकर सिर धड़ से अलग कर दिया। फिर तीनों पुत्रियाँ पेड़ से लिपटी तो उनकी भी गर्दनें काटकर सिर को धड़ से अलग कर दिया।

यह खबर जंगल में आग की तरह फ़ैल गयी। आस–पास के 84 गांवों के लोग आ गये। उन्होंने एक मत से तय कर लिया कि एक पेड़ के एक बिश्नोई लिपटकर अपने प्राणों की आहुति देगा। सबसे पहले बुजुर्गों ने प्राणों की आहुति दी। तब मंत्री गिरधारी दास ने बिश्नोईयों को ताना मारा कि तुम अवांछित बूढ़े लोगों की बलि दे रहे हो। उसके बाद तो ऐसा जलजला उठा कि बड़े, बूढ़े, जवान, बच्चे, स्त्री–पुरुष सभी में प्राणों की बलि देने की होड़ मच गयी। बिश्नोई जन पेड़ों से लिपटते गये और प्राणों की आहूति देते गये। आखिर मंत्री गिरधारी दास को पेड़ो की कटाई रोकनी पड़ी। ये तूफ़ान थमा तब तक कुल 363 बिश्नोईयों (71 महिलायें और 292 पुरूष) ने पेड़ की रक्षा में अपने प्राणों की आहूति दे दी। खेजड़ली की धरती बिश्नोईयों के बलिदानी रक्त से लाल हो गयी। यह मंगलवार 21 सितम्बर 1730 (भाद्रपद शुक्ल दशमी, विक्रम संवत 1787) का ऐतिहासिक दिन विश्व इतिहास में इस अनूठी घटना के लिये हमेशा याद किया जायेगा।

समूचे विश्व में पेड़ रक्षा में अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देने की ऐसी कोई दूसरी घटना का विवरण नहीं मिलता है। इस घटना से राजा के मन को गहरा आघात लगा, उन्होंने बिश्नोईयों को ताम्रपत्र से सम्मानित करते हुए जोधपुर राज्य में पेड़ कटाई को प्रतिबंधित घोषित किया और इसके लिये दण्ड का प्रावधान किया। अमृता देवी के अगुवाई में बिश्नोई समाज का यह बलिदानी कार्य आने वाली अनेक शताब्दियों तक पूरी दुनिया में प्रकृति प्रेमियों में नयी प्रेरणा और उत्साह का संचार करता रहेगा। बिश्नोई समाज आज भी अपने गुरू जांभोजी महाराज के 29 नियमों की सीख पर चलकर राजस्थान के रेगिस्तान में खेजड़ी के पेड़ों और वन्यजीवों की रक्षा कर रहा है।

प्रिय पाठकों, दिन प्रतिदिन पर्यावरण अनेकानेक कारणों से असंतुलित हो रहा है। ये हमारे लिये तथा आने वाली पीढ़ियों के लिये खतरे की घंटी है। हमें इस सच्ची घटना से सीख लेकर जी–जान से पर्यावरण संतुलन में सहयोग करना चाहिये। अमृतादेवी एवं शहीद हुए 363 बिश्नोई बन्धुओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्रत्येक मानसून में वृक्षारोपण से अच्छा और कोई कार्य नहीं हो सकता।

विश्व जनसंख्या दिवस

राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला सीकर एवं नेशनल ग्रीन कोर के तत्वावधान में 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस पर जिले के विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए।

स्काउट गाइड जिला मुख्यालय पर विश्व जनसंख्या दिवस पर बसंत कुमार लाटा सीओ स्काउट, प्रियंका कुमारी सीओ गाइड के नेतृत्व में श्री कल्याण कन्या महाविद्यालय की रेंजर कोमल ने जनसंख्या नियंत्रण का संदेश देने वाली रंगोली बनाई, पौधारोपण किया, आदर्श विद्या निकेतन स्काउट ग्रुप कोलीडा, पाटन, स्काउट ग्रुप मानासी, स्काउट ग्रुप सिहोट बड़ी, स्काउट ग्रुप प्रीतम पुरी सहित अनेक स्थानों पर, पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, नारा लेखन प्रतियोगिता, शपथ दिलवाना, पौधारोपण करना सहित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।

स्थानीय संघ शिवसिंहपुरा के आदर्श विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय कोलीड़ा के स्काउट मास्टर अलिताब धोबी ने बताया कि विद्यालय मे विश्व जनसंख्या दिवस के अन्तर्गत स्काउट्स ने गमलों मे मिट्टी भरकर पौधे लगाए तथा पौधो की खरपतवार हटाकर उनकी संभाल की तथा साथ ही पोस्टर, निबंध, नारा लेखन आदि प्रतियोगिता का आयोजन कर विजेताओ को इनाम दिए। स्काउट्स को स्काउट मास्टर अलिताब धोबी के द्वारा जनसंख्या नियंत्रण की शपथ दिलायी गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुल्तान सिंह मील, गाइडर सीता देवी, संदीप कुमार, भगत सिंह ओपन रोवर क्रू के रोवर लीडर इमरान अली, रोवर सुरेश कुमार दानोदिया, मोहम्मद फरहान स्काउट, हर्षित वर्मा, लवीश, निकित, आशीष, विष्णु, मनीष, बादल आदि के साथ पूरा विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहा।

राउमावि सिहोट बड़ी में प्रिंसिपल रश्मि दाधीच के निर्देशन में विश्व जनसंख्या दिवस मनाया इस वर्ष की थीम 'एक ऐसी दुनिया को इमेजिंग करे जहां हम सभी आठ अरब लोगों का फ्यूचर एक्सपेक्टेशन ओर पोटेन्सियल से भरपूर हो' को मध्यनजर रखते हुए कार्यशाला का आयोजन करवाया।

नेशनल ग्रीन कोर

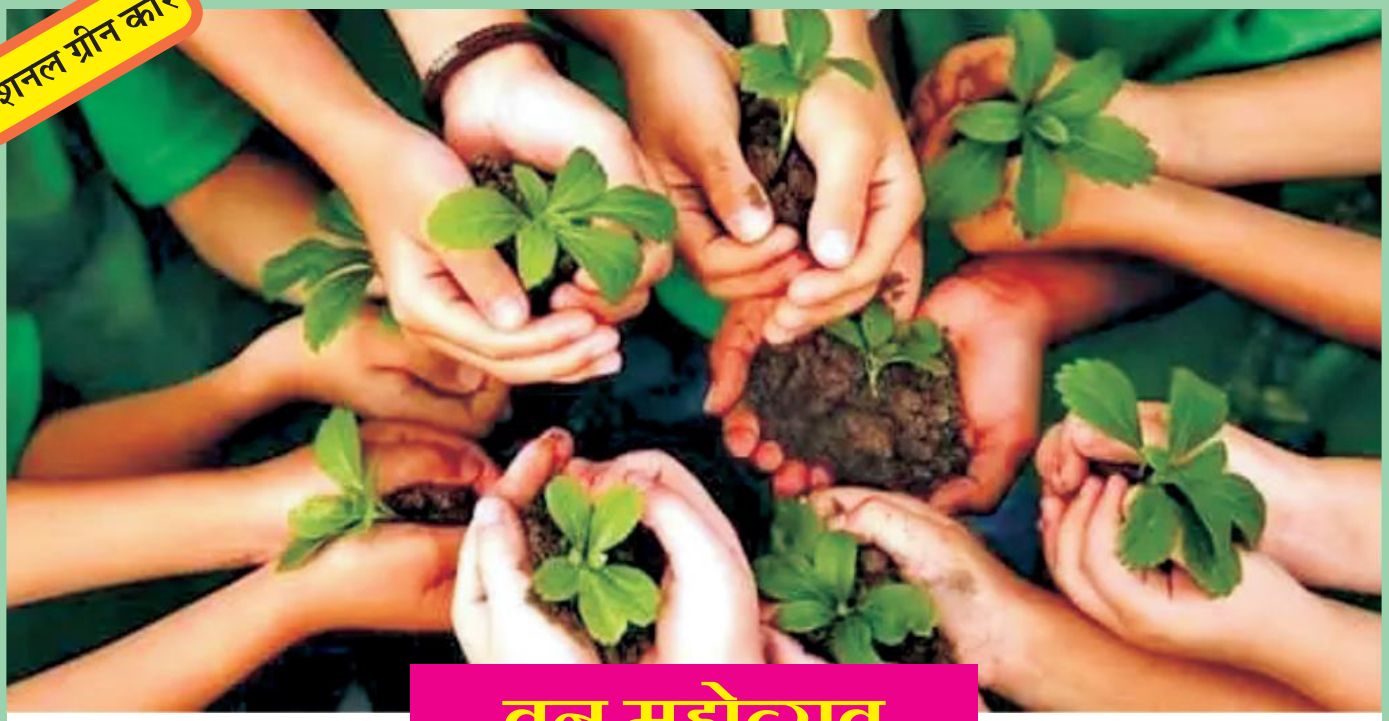

वन महोत्सव

प्रस्तोता - दयाकान्त सक्सैना

यदि आपको स्वच्छ पर्यावरण देखना है तो वनों में भ्रमण करना पड़ेगा। वन में पादप, जीव–जन्तु स्वच्छन्द रूप से विचरण करते पाये जाते हैं। नदी, तालाब, झरने आदि वनों की सुन्दरता में चार चाँद लगा देते हैं। वनों में जैवविविधता प्राकृतिक रूप से पाई जाती है।

क्यों मनाते हैं, हम वन महोत्सव :

वनों से हमको शुद्ध ऑक्सीजन, अन्न, फल, सब्जी, गोंद, मसाले, औषधि, लकड़ी, इमारती लकड़ी, तम्बाकू, लेटेक्स, लाख, सेलूलोज, सजावटी पादप, कत्था, ग्वारपाठा, रेजिन, नील, चन्दन, शहद, रेशम आदि वस्तुऐं प्राप्त होती है। इसके अलावा वृक्षों के वाष्पोत्सर्जन में निकला जल वाष्प संघनित होकर वर्षा के रूप में पुनः प्राप्त हो जाता है। मृदा संरक्षण के अलावा वाइरस, बेक्टीरिया, शेवाल, छोटे पादप, पक्षी एवं वन्य जीवों को वृक्ष आशियाना प्रदान करते हैं। वृक्षों की पत्ती सड़–गलकर ह्यूमस बनाती है।

इसके अलावा जन्तुओं द्वारा श्वसन में निकली हानिकारक कार्बन डाई ऑक्साइड को वृक्ष भोजन बनाने में उपयोग में ले लेते हैं। साथ ही उच्च आवृत्ति की ध्वनि का अवशोषण कर ध्वनि प्रदूषण भी कम करते हैं। इस कारण वृक्ष प्रकृति की अनमोल देन हैं। इनके संरक्षण हेतु वन महोत्सव बनाना आवश्यक है। वन महोत्सव का प्रमुख उद्देश्य वनों को कटने से बचाना एवं नये वृक्ष लगाकर वन्य जीव–जन्तुओं का संरक्षण करना है।

राजस्थान में वनों की स्थिति :

पर्यावरण संरक्षण के अनुसार कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 33 प्रतिशत भाग वनों से आच्छादित होना आवश्यक है। राजस्थान में लगभग 32 हजार चार सौ 88 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में वन पाये जाते हैं। यह कुल क्षेत्रफल का 9.49 प्रतिशत है। राजस्थान में सिरोही जिले में 31 प्रतिशत, उदयपुर–राजसमन्द में 29.4 प्रतिशत, करौली–सवाई माधोपुर में 27.6 प्रतिशत एवं कोटा–बांरा में 28.8 प्रतिशत वन पाये जाते हैं।

दक्षिण राजस्थान में बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, कोटा, बारां एवं झालावाड़ में सागवान, आम, बरगद, तेंदू, झाल आदि वृक्षों की बहुतायत है। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में धौकड़ा, खैर, कत्था, आंवला, बबूल, नीम, महुआ, शीशम, नदी तटीय किनारों पर पलास, ढ़ाक, वड़, शीशम, रोहिड़ा, सेमल एवं उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में खेजड़ी, रोहिड़ा, बेर, थोर, बबूल पाये जाते है। खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष है। काजरी (जोधपुर) में इजरायल से आयात किया हुआ पादप 'जौजोवा' लगाया गया है, जो रेगिस्तान को हरा–भरा रखने में सहायक है।

राज्य में वृक्षों के पूजन की परम्परा:

देश में आंवला, बरगद, आम, तुलसी, अशोक, पीपल एवं केला के वृक्षों को पूजने की परम्परा वैदिक काल से चली आ रही है, जिसके पीछे पर्यावरण संरक्षण की भावना निहित है। राजस्थान में राजवंशो द्वारा भी नीम, पीपल, बड़, खेजडी एवं कदम्ब आदि वृक्षों को पूजने की परम्परा रही है।

वृक्षों के संरक्षण हेतु जीवन दान :

वृक्षों के संरक्षण के लिऐ त्याग एवं बलिदान का राजस्थान से बड़ा उदाहरण मिलना मुश्किल है, जोधपुर के खेजड़ी गांव में वृक्षों को कटने से रोकने हेतु अम्रता बाई तथा अन्य लोग वृक्षों से चिपक गये तथा गांव के 350 लोगों ने अपना बलिदान दिया था।

साहसिक प्रयास – अगस्त 2009 में डूंगरपुर के एक गांव में सूर्योदय से सूर्यास्त तक लगभग 6 लाख पौधे रोपित किये गये।

राजस्थान में हरित राजस्थान अभियान :

पर्यावरण संरक्षण की एवं जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिये राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय अशोक गहलोत ने 18 जून 2009 को शिक्षा संकुल में वृक्षारोपण कर हरित राजस्थान का शुभारम्भ कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सराहनीय प्रयास किया। इसी क्रम में राज्य वन्य जीवन मण्डल की स्थाई समिति की बैठक में 8 नये वन्य जीवन संरक्षण क्षेत्र बनाकर संकट ग्रस्त वन्य जीवों के संरक्षण की दिशा में उत्कृष्ट प्रयास राज्य सरकार ने किये है।

स्काउट व गाइड प्रदेश संगठन के प्रयास :

राजस्थान प्रदेश संगठन के स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य की अगुवाई में 11 जुलाई, 2011 को 'गो–ग्रीन' अभियान में स्काउट गाइड के सहयोग से प्रदेश भर में 11 लाख वृक्षारोपण कर सराहनीय प्रयास किया गया।

वन महोत्सव पर विद्यालय में क्या करें –

1. स्काउट गाइड से जुड़े छात्र–छात्रा द्वारा एवं अध्यापक अन्य छात्रों को इस दिवस पर विद्यालय सामुदायिक स्थल तथा अपने घरों पर एक–एक वृक्ष अवश्य लगाये एवं उनके पालन पोषण की जिम्मेदारी भी ले।
2. स्काउट गाइड प्रभारी बच्चों को आस–पास के वन क्षेत्रों अथवा अभ्यारण्य का भ्रमण कर जैव विविधता की जानकारी दें।
3. इको क्लब एवं विज्ञान क्लब के माध्यम से 'वृक्ष लगाओ–पर्यावरण बचाओ' रैली का आयोजन कर सकते हैं।
4. पॉलीथिन के बहिष्कार की शपथ लें।
5. वन्य जीव जन्तुओं एवं संकट ग्रस्त पादपों एवं जन्तुओं के संरक्षण हेतु निबन्ध, वाद–विवाद, भाषण एवं चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कर सकते हैं।
6. वनों के विकास से होने वाले नुकसान के बारे में जन चेतना जाग्रत कर सकते हैं।
7. विद्यालय, स्थानीय संघ एवं जिला स्तर पर वन महोत्सव को धूम–धाम से मनाये।

''है पावन संकल्प हमारा-हरा-भरा हो यह जग प्यारा''

''धरती माता करे पुकार-वृक्ष लगाकर करो श्रृंगार''

CELEBRATIONS DAYS : AUGUST-SEPTEMBER 2023

09 August	:	Indian Revolution Day
12 August	:	International Youth Day
13 August	:	Organ Donation Day
15 August	:	Independence Day
19 August	:	World Humanitarian Day
20 August	:	Sadbhavana Day
26 August	:	Women's Equality Day
29 August	:	National Sports Day
05 September	:	Teacher's Day
08 September	:	International Literacy Day

Plan an activity with your unit on these days and send your success stories & photos to "scoutguidejyoti@gmail.com"

पर्यटन स्थल

जयसमन्द झील

–स्काउट गाइड ज्योति डेस्क

जयसमन्द झील या 'ढेबर झील' राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। इस झील को एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील होने का दर्जा प्राप्त है। यह उदयपुर ज़िला मुख्यालय से 51 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण–पूर्व की ओर उदयपुर–सलूम्बर मार्ग पर स्थित है। अपने प्राकृतिक परिवेश और बाँध की स्थापत्य कला की खूबसूरती से यह झील वर्षों से पर्यटकों के आकर्षण का महत्वपूर्ण स्थल बनी हुई है।

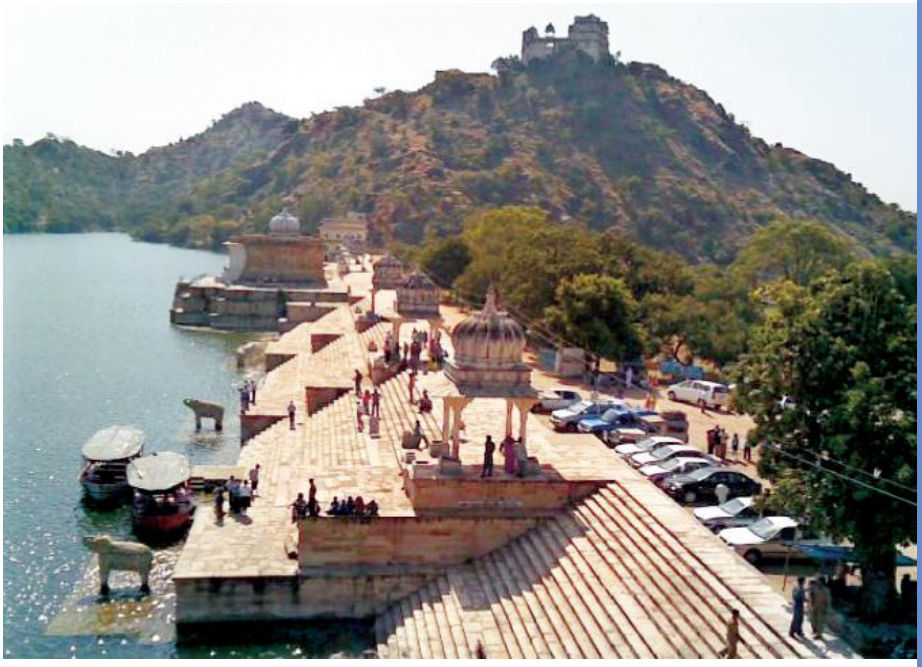

इतिहास

उदयपुर के तत्कालीन महाराणा जयसिंह द्वारा 1687 एवं 1691 ईसवी के मध्य 14 हज़ार 400 मीटर लंबाई एवं 9 हज़ार 500 मीटर चौड़ाई में निर्मित यह कृत्रिम झील एशिया की सबसे बड़ी मीठे पानी का स्वरूप मानी जाती है। दो पहाड़ियों के बीच में ढेबर दर्रा को कृत्रिम झील का स्वरूप दिया गया और महाराणा जयसिंह के नाम पर इसे 'जयसमन्द' कहा जाने लगा। बताया जाता है कि कुछ वर्षों पूर्व इस झील में नौ नदियों एवं आधा दर्जन से भी अधिक नालों से जल आता था, लेकिन अब मात्र गोमती नदी और इसकी सहायक नदियों और कुछ नालों से ही जल का आगमन हो पाता है।

बाँध का निर्माण

ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार यह भी बताया जाता है कि झील में पानी लाने वाली गोमती नदी पर महाराणा जयसिंह ने 375 मीटर लंबा एवं 35 मीटर ऊँचा बाँध बनवाया था, जिसके तल की चौड़ाई 20 मीटर एवं ऊपर से चौड़ाई पाँच मीटर है। बाँध का निर्माण बरवाड़ी की खानों के सफ़ेद सुमाजा पत्थर से कराया गया है। झील की मजबूती के लिहाज से दोहरी दीवार बनाई गई है। सुरक्षा की दृष्टि से बाँध से क़रीब 100 फीट की दूरी पर 396 मीटर लंबा एवं 36 मीटर ऊँचा एक और बाँध बनवाया गया। महाराणा सज्जन सिंह एवं फतह सिंह के समय में इन दो बाँधों के बीच के भाग को भरवाया गया और समतल भूमि पर वृक्षारोपण किया गया।

स्थापत्य

स्थापत्य कला की दृष्टि से बना बाँध अपने आप में आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। झील की तरफ़ के बाँध पर कुछ–कुछ दूरी पर बनी छह खूबसूरत छतरियाँ पर्यटकों का मन मोह लेती हैं। गुम्बदाकार छतरियाँ पानी की तरफ़ उतरते हुए बनी हैं। इन छतरियों के सामने नीचे की ओर तीन–तीन बेदियाँ बनाई गई हैं। सबसे नीचे की बेदियों पर सूंड को ऊपर किए खड़ी मुद्रा में पत्थर की कारीगरी पूर्ण कलात्मक मध्यम कद के छह हाथियों की प्रतिमा बनाई गई है। यहीं पर बाँध के सबसे उँचे वाले स्थान पर महाराणा जयसिंह द्वारा भगवान शिव को समर्पित 'नर्मदेश्वर महादेव' का कलात्मक मंदिर भी बनाया गया है।

एशिया की संभवतः सबसे बड़ी कृत्रिम झील बाँध के उत्तरी छोर पर महाराणा फ़तह सिंह द्वारा निर्मित महल है, जिन्हें अब विश्रामगृह में तब्दील कर दिया गया है। दक्षिणी छोर पर बने महल 'महाराज कुमार के महल' कहे जाते थे। दक्षिण छोर की पहाड़ी पर महाराणा जय सिंह द्वारा बनाए गए महल का जीर्णोद्धार महाराणा सज्जन सिंह के समय कराया गया था। उन्होंने इस झील के पीछे 'जयनगर' को बसाकर कुछ इमारतें एवं बावड़ी का निर्माण करवाया था, जो आबाद नहीं हो सके। आज यहाँ निर्माण के कुछ अवशेष ही नजर आते हैं।

आकर्षक पर्यटन स्थल

जयसमन्द झील पर्यटकों के आकर्षण का बड़ा केन्द्र बन गई है। झील के अंदर बांध के सम्मुख एक टापू पर पर्यटकों की सुविधा के लिए 'जयसमन्द आइलेंड' का निर्माण एक निजी फर्म द्वारा कराया गया है। यहाँ तक पहुँचने के लिए नौका का संचालन किया जाता है। नौका से झील में घूमना अपने आप में अनोखा सुख का अनुभव देता है। जयसमन्द झील के निकट वन एवं वन्यजीव प्रेमियों के लिए वन विभाग द्वारा वन्यजीव अभयारण्य भी बनाया गया है। यहाँ एक मछली पालन का अच्छा केन्द्र भी है। झील की खूबसूरती और प्राकृतिक परिवेश की कल्पना इसी से की जा सकती है कि अनेक फ़िल्मकारों ने अपनी फ़िल्मों में यहाँ के दृश्यों को कैद किया है। सड़क के किनारे सघन वनस्पति एवं वन होने से उदयपुर से जयसमन्द झील पहुँचना भी अपने आप में किसी रोमांच से कम नहीं है।

दक्षता पदक

स्काउट गाइड ज्योति के इस अंक से हम दक्षता पदकों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है यह जानकारी प्रशिक्षण के मद्देनज़र उपयोगी साबित होगी। बालिकाओं में चरित्र विकास हेतु 4 बैजों को रखा गया है, जिनमें से निम्न दो पदकों की विस्तृत जानकारी इस अंक में प्रस्तुत है।

संग्रहकर्ता COLLECTOR

संग्रह कर संग्रह करने की प्रवृत्ति को ढालने के लिए माचिस के रेपर, विभिन्न प्रकार के टिकिट्स, फोटो, फोटो पोस्ट कार्ड, रंग रंगीले मोती इत्यादि का संग्रह कर जीवन में सामान संजोकर रखना, खेल खेल में ही विकसित होता है।

बुलबुल को इसके लिए निर्देशित करते है कि आप उपरोक्त में रूचिनुसार संग्रह हेतु चयन करें और उन्हें 25 की तादाद में सलीके से व्यवस्थित लॉग करें। इनमें अनाज, सिक्के इत्यादि का चयन भी किया जा सकता है।

निर्देश – सौंपे गये कार्य को तीन माह में ही पूर्ण कर रिपोर्ट करनी होगी। वस्तुनुसार पैकिंग, नाम, उपयोगिता या विशिष्टता के बारे में लिखें।

अन्य विशिष्ट संग्रह को सिनरी, झालर के माध्यम से मोती, कतरन, अनाज को प्रकट किया जा सकता है। अधिकतम सुन्दर प्रकट करने के प्रयास द्वारा बालिकाओं में इस गतिविधि से सृजन व सुव्यवस्था की प्रवृत्ति को विकसित किया जाता है।

संग्रह के पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भी अन्य सामग्री के संग्रह को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिसमें छोटी–छोटी कविता, नेताओं के चित्र, ऐतिहासिक स्थलों के चित्रों का संग्रह भी किया जा सकता है।

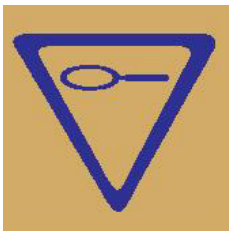

ध्यान रखने योग्य बातें :-

- तीन माह तक कार्य किया जाए।
- 25 की संख्या में संग्रह करना अनिवार्य है।
- संग्रह की वस्तु विभिन्नता लिए होनी चाहिए।
- अन्न और सिक्कों का संग्रह पॉलीथिन की थैली में पैक करें।
- संग्रह की गई वस्तु के अनुसार ही प्रस्तुति हो जैसे पत्ते, फूल किसी डायरी में कॉलाज (गौंद से चिपकाना) करें।
- वाद्य यंत्रों या आसन हो तो उनके नाम व उपयोग लिखे जाएं।

इन कार्यों को सुव्यवस्थित बनाने के लिए फ्लॉक लीडर के निर्देश की सहायता, आवश्यकता साथ ही श्रेष्ठ प्रस्तुति को बढ़ावा देने के लिए अन्य बुलबुल के सामने उदाहरण व प्रमाण प्रस्तुत करें। उपरोक्त कार्यों द्वारा बालिका की अभिरूचि व अभिवृत्ति का आभास हो जाता है और फ्लॉक लीडर उन्हें उचित मार्ग प्रशस्त करती हैं।

बागवानी GARDENER

आने वाले तीन माह वर्षा ऋतु के हैं और बागवानी के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय है। पर्यावरण से लगाव प्रकृति से प्रेम के लिए बागवानी बैज बुलबुल में कर्तव्य निष्ठा व प्राणी मात्र की सेवा को जागृत करता है।

बैज को प्राप्त करने के लिए निम्न अपेक्षित है :-

बागवानी दक्षता बैज हेतु 1.50 वर्गमीटर भूखण्ड की तीन माह देखभाल कर उसे अधिक उपजाऊ बनाकर तैयार करना। इस पर तीन तरह की सब्जियों (मौसमानुसार) या फूलदार पौधों का लगाना। किसी क्षेत्र या बाग का चयन करके प्रत्येक वर्ग में चार के नाम जाने (क) वृक्ष या झाड़ियाँ (ख) फूल या सब्जियाँ (ग) खड़ी फसलें या खरपतवार।

पदक प्राप्त करने के लिए क्या करें ?

उपरोक्त द्वारा अन्तर जानना वृक्ष किसका? कैसी पत्तियाँ? कैसी छाल? कैसा उपयोग? फूल और फल किस रंग के आते हैं? फूल या सब्जी किस मौसम में कौनसी आती है? कैसा रंग? कैसा स्वाद होता है? समस्त बातों का समाधान बागवानी कार्य के दौरान मिल जाता है। ऐसे ही फसलों का अन्तर बोध कर सके। ऊँचे घास के रूप में नजर आती फसल या खरपतवार का अन्तर जाने।

- बागवानी के काम में आने वाले उपकरणों को पहचाने व उनके उपयोग कर सके। जैसे फावड़ा, गैंती, बेलचा आदि।
- रेक या अन्य औजार और उनका उपयोग कब करें जाने।
- कम से कम छः पृष्ठ की संग्रह पुस्तिका बनाना जिसमें 12 दबी पत्तियों फूल या सब्जियाँ जिनका संग्रह किया जा सके।
- विद्यालय या सार्वजनिक स्थान में गमला तैयार कर उसे तीन माह देखभाल कर दो चीज उगाएं।
- राई सलाद, मटर, रसदार खरबूजे, तरबूज की तरह के फल का बीज शीशे की नली या ब्लॉटिंग पेपर पर उगाना।

उपरोक्त के पीछे बुलबुल बालिका में बीज से पौधा बनाने की प्रक्रिया को देखना, लगाव उत्पन्न होना, अपनी उपलब्धि व प्रकृति के प्रति रूझान पैदा करना है। ''ईको फ्रेण्डली बिहेव करना''।

गतिविधि पञ्चांग

राज्य स्तरीय पञ्चांग

प्रस्तावित

गतिविधि का नाम	स्थान	दिनांक
स्काउटर गाइडर बेसिक कोर्स (केजीबीवी, महात्मा गांधी, मॉडल विद्यालयों के लिए)	मण्डल स्तर	01 से 07.08.2023
राज्य स्तरीय सचिव संगोष्ठी	बनीपार्क, जयपुर	03.08.2023
राज्य स्तरीय प्रभारी कमिश्नर संगोष्ठी	बनीपार्क, जयपुर	04.08.2023
राज्य पुरस्कार पंजीकरण ऑनलाइन फॉर्म भिजवाना	मण्डल स्तर	15.08.2023 तक
जिला परिषद वार्षिक अधिवेशन	जिला स्तर पर	15.08.2023 तक
सद्भावना दिवस (राज्य स्तरीय साइकिल हाइक)	स्थानीय/जिला/मण्डल स्तर	16 से 20.08.2023 तक
स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत न.1	21 से 25.08.23 तक
महाविद्यालय प्राचार्य, रोवर/रेंजर लीडर संगोष्ठी	मण्डल स्तर	31.08.2023 तक
निपुण रोवर/रेंजर प्रशिक्षण शिविर	जिला स्तर	30.08.2023 तक
रोवर/रेंजर विकास समिति सभा	मण्डल स्तर पर	31.08.2023 तक
चतुर्थ चरण/हीरक पंख/गोल्डन ऐरो प्रशिक्षण शिविर	जिला स्तर पर	31.08.2023 तक
द्वितीय/तृतीय सोपान/टोली नायक प्रशिक्षण शिविर	स्थानीय संघ स्तर	31.08.2023 तक
राज्य पुरस्कार पंजीकरण ऑनलाइन फॉर्म भिजवाना	राज्य मुख्यालय	31.08.2023 तक
हिमालय वुड बैज री–यूनियन	मण्डल स्तर	31.08.2023 तक
कम्यूनिटी डवलपमेन्ट सेमिनार	मण्डल स्तर पर	31.08.2023 तक
उद्योग पर्व सप्ताह	ग्रुप/स्थानीय संघ स्तर	07 से 14.09.2023 तक
प्रेसिडेन्ट रोवर/रेंजर प्रशिक्षण शिविर	आबू पर्वत नं. 01	11 से 15.09.2023 तक
राज्य स्तरीय जनजाति महोत्सव	उदयपुर	11 से 15.09.2023 तक
स्थानीय संघ स्तरीय रैलियां	स्थानीय संघ स्तर पर	11 से 16.09.2023 तक
स्काउटर/गाइडर बेसिक कोर्स	जिला/मण्डल स्तर	12 से 18.09.2023 तक
स्काउटर/गाइडर एडवांस कोर्स	मण्डल स्तर पर	12 से 18.09.2023 तक
गाइडर अध्ययन शिविर	मण्डल स्तर पर	16 से 18.09.2023

अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चांग

PROPOSED

NAME OF EVENTS	MONTHS & DATES	VENUE
25th World Scout Jamboree	01 - 12 August, 2023	Saemangeum, Korea
National Rover Conference	19 - 23 August 2023	Taitung, Taiwan
19th Girl Scout International Camp	02 - 06 October, 2023	Online
51st Asia-Pacific Regional Basic Management Course for Scout Executives	20 - 30 November, 2023	Thailand
10th National Jamboree - 2024 - Sri Lanka	20 - 26 February, 2024	Trincomalee

National Headquarters website : www.bsgindia.org

पर्यावरण जागरूकता रैली व अन्य आयोजनों की झलकियां

भीलवाड़ा

जोधपुर

सीकर

जैसलमेर

सिरोही

कुर्सियांग, दार्जिलिंग में आयोजित स्काउटर/गाइडर शैक्षिक भ्रमण शिविर में सहभागिता करते हुए स्काउटर/गाइडर

प्रकाशक व मुद्रक : डॉ. पी.सी. जैन, राज्य सचिव, राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स व गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर
फोन नं. 0141-2706830 द्वारा मैसर्स हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित।

हिन्दी मासिक एक प्रति रूपये पन्द्रह
प्रकाशन - प्रत्येक माह
पंजीकृत समाचार पत्रों की श्रेणी के अन्तर्गत
आर.एन.आई. नम्बर : RAJ BIL/2000/01835
प्रेषक :-
राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, बजाज नगर, जयपुर-302015
फोन : 0141-2706830, 2941098
ई-मेल : scoutguidejyoti@gmail.com

Follow us on : facebook.com/scoutguidejyoti